Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ
اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ

अल् ईनाम : 22

अनुवाद : और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन हो सकता है जिसने अल्लाह पर कोई झूठ गढ़ा या उसकी आयतों को झुठलाया। निश्चय ही ज़ालिम लोग सफल नहीं होते।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 9
अंक - 48
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

18 जमादिउल अव्वल, 1446 हिज्री कमरी, 28 नबुव्वत 1403 हिज्री शम्सी, 28 नवंबर 2024 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

मुहसिन का शुक्रगुज़ार होना

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो लोगों का शुक्र अदा नहीं करता, वह ख़ुदा तआला का भी शुक्र अदा नहीं करता। (सुनन अल्-तिर्मिज़ी, किताबुल बिर्र वस्सलात, बाब मा जाआ फ़िश-शुक्र लेमन अह्सना इलैक)

सब्र और इस्तिक़ामत

हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं : मैं और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मक्का की वादी में जा रहे थे। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मेरा हाथ पकड़ा हुआ था। हम अबू अम्मार, अम्मार और उनकी वालिदा (मां) के पास पहुंचे। उन्हें तकलीफें दी जा रही थीं। हज़रत यासिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा : क्या हमेशा ऐसा ही होता रहेगा? आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत यासिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से फ़रमाया : सब्र करो। और फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह दुआ भी की : "हे अल्लाह! आले-यासिर की मग़फ़िरत फ़रमा और बेशक तूने ऐसा कर दिया है।"

(अल्-तबक़ातुल् कुबरा, भाग 3, पृष्ठ 188, अम्मार बिन यासिर, प्रकाशन दारुल् अह्या अल् तुर्रास अल-अरबी, बेरूत, 1990)

★ ★ ★

तरक्क़ी की एक ही राह है कि ख़ुदा को पहचानें और उस पर ज़िंदा ईमान पैदा करें

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

इस्लाम किसी को सुस्त नहीं बनाता। अपनी व्यापारों और नौकरियों में भी व्यस्त रहें। परंतु मैं यह नहीं पसंद करता कि ख़ुदा के लिए कोई भी समय खाली न हो। हां, व्यापार के समय पर व्यापार करें और अल्लाह तआला के खौफ और ख़ुशीयत को उस समय भी ध्यान में रखें, ताकि वह व्यापार भी उनकी इबादत का रंग ले ले।

नमाज़ के समय पर नमाज़ को न छोड़ें। हर मामले में, चाहे कोई भी हो, दीन को प्राथमिकता दें। दुनिया का उद्देश्य केवल दुनिया न हो, असली उद्देश्य दीन हो। फिर दुनिया के काम भी दीन के ही काम होंगे। सहाबा (रज़ीअल्लाहु अन्हुम) को देखो कि उन्होंने सबसे मुश्किल समय में भी ख़ुदा को नहीं छोड़ा। लड़ाई और तलवार का वक्त इतना खतरनाक होता है कि केवल उसकी कल्पना से ही इंसान घबरा उठता है। वह वक्त, जब जोश और ग़ुस्से का समय होता है, ऐसी हालत में भी उन्होंने ख़ुदा से ग़फ़लत नहीं की। नमाज़ को नहीं छोड़ा। दुआओं का सहारा लिया। अब यह बदकिस्मती है कि आजकल हर तरह से कोशिशें होती हैं। बड़ी-बड़ी तकरीरें करते हैं। जलसे करते हैं कि मुसलमान तरक्क़ी करें। परंतु ख़ुदा से इतने ग़ाफ़िल हो गए हैं कि भूलकर भी उसकी तरफ ध्यान नहीं देते। फिर ऐसी हालत में क्या उम्मीद हो सकती है कि उनकी कोशिशें नतीजा दे सकें, जबकि वे सारी कोशिशें सिर्फ दुनिया के लिए हैं। याद रखो, जब तक "ला इलाहा इल्लल्लाह" दिल-ओ-जिगर में पूरी तरह समा न जाए और वजूद के ज़र्रे-ज़र्रे पर इस्लाम की रौशनी और हुकूमत न हो, कभी तरक्क़ी नहीं होगी।

अगर तुम पश्चिमी कौमों का उदाहरण पेश करो कि वे तरक्क़ी कर रही हैं, उनके लिए अलग मामला है। तुम्हें किताब दी गई है। तुम्हारे ऊपर हुज्जत पूरी हो चुकी है। उनके लिए अलग मामला और हिसाब-किताब का दिन है। अगर तुम किताबुल्लाह को छोड़ोगे, तो तुम्हारे लिए इसी दुनिया में जहन्नुम मौजूद है।

आज की हालत यह है कि लगभग हर शहर में मुसलमानों की बेहतरी के लिए संगठन और कांफ्रेंसें होती हैं। लेकिन किसी हमदर्द-ए-इस्लाम की ज़बान से यह नहीं निकलता कि कुरआन को अपना इमाम बनाओ।

शेष पृष्ठ 06 पर

अल्लाह तआला कभी किसी क़ौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि वह ख़ुद अपनी आंतरिक हालत को न बदल ले

सैय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः हज आयत नंबर 66 की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : यह बात याद रखनी चाहिए कि अज़ाब (सज़ा) हमेशा दो प्रकार के होते हैं। एक तो शरई अज़ाब (धार्मिक सज़ा) होते हैं और दूसरा तबीआी अज़ाब (प्राकृतिक सज़ा) होते हैं। शरई अज़ाब उसी वक़्त आता है जब लोग अल्लाह तआला के किसी रसूल को झुठलाते हैं। परंतु तबीआी अज़ाब के लिए यह कोई शर्त नहीं है। बल्कि जो भी क़ौम तरक़्क़ी के उन साधनों से ग़ाफ़िल हो जाएगी जिन्हें अल्लाह तआला ने इस भौतिक दुनिया में निर्धरित किया है, वह अल्लाह तआला के आम क़ानून के तहत ख़ुद-ब-ख़ुद नष्ट हो जाएगी। जैसा कि अब तक दुनिया के नक्शे पर हज़ारों क़ौमें और हुकूमतें उभरीं और फिर एक समय ऐसा आया कि वे कमज़ोरी और पतन का शिकार होकर मिट गईं, और दुनिया के नक्शे पर उनका कोई निशान तक बाक़ी नहीं रहा।

इन क़ौमों की तबाही और बर्बादी अल्लाह तआला की मोहब्बत की कमी या उसके रसूलों के इंकार की वजह से नहीं हुई, बल्कि इसलिए हुई कि उन्होंने तरक़्क़ी के उन क़ानूनों को नज़रअंदाज़ कर दिया जो अल्लाह तआला ने इस दुनिया में लागू किए हुए हैं। इन दोनों प्रकार के अज़ाबों का अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम की मुख़्तलिफ़ आयात में वर्णन किया है।

शरई अज़ाब

शरई अज़ाब के बारे में अल्लाह फ़रमाता है :

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا

"वमा कुन्ना मुअज्ज़िबीना हत्ता नबअ़स रसूलन"

(सूरः बनी इसराईल, रुकू : 2)

अर्थात : "हम किसी क़ौम पर अज़ाब नहीं भेजते जब तक उसकी तरफ़ अपना कोई रसूल न भेज दें।"

जब रसूल के आने के बाद उस क़ौम पर हुज्जत पूरी हो जाती है और वह इंकार और झुठलाने में बढ़ती जाती है, तो आख़िर उस क़ौम की तबाही का फ़ैसला कर दिया जाता है और वह अज़ाब का शिकार हो जाती है।

शरई अज़ाब की पहचान यह होती है कि इसके बारे में पहले से भविष्यवाणी में खबर दे दी जाती है। या दुनिया में ऐसे असामान्य हादसे और मुसीबतें पेश आने लगती हैं जिनकी मिसाल पहले के ज़माने में नहीं मिलती। उदाहरणतः अचानक एक के बाद एक भूकंप आने लगते हैं, बीमारियां फैलती हैं, क़हत (सूखा), लड़ाईयां और दूसरे तरह की आपदाएं एक ही वक़्त में इस तरह जमा हो जाती हैं कि लोग हैरत में पड़ जाते हैं और हर कोई मानने लगता है कि ये असामान्य घटनाएं हैं।

शेष पृष्ठ पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

बनू क़ुरैज़ा की क़ैदी महिलाओं का बँटवारा किया गया हो या उन्हें बेचा गया हो, इस अवसर पर पैगंबर मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ऐसा आदेश दिया जो आपकी करुणा और महिलाओं के प्रति आपकी कृपा को दर्शाता है और जिसे सोने के अक्षरों से लिखने योग्य कहा जा सकता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर कोई महिला बाँटी जाए या बेची जाए, और उसके साथ छोटा बच्चा या बच्ची हो, तो उसे उसकी माँ से अलग न किया जाए जब तक वह बालिग न हो जाए। इसी तरह, यदि दो छोटी बहनें हों, तो उन्हें भी बालिग होने तक अलग न किया जाए।

क़बीला औस की तरफ़ से बनू क़ुरैज़ा के पक्ष में सिफ़ारिश सुनने पर हज़रत साद (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया, "अब वह समय आ गया है कि मैं अल्लाह तआला के बारे में किसी आलोचक की आलोचना की परवाह न करूं।"

बनू क़ुरैज़ा के मामले पर निर्णय करने के लिए हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो के आने पर, पैगंबर मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "अपने सरदार के सम्मान में खड़े हो जाओ।" और एक रिवायत में है कि आपने फ़रमाया, "अपने इस सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति के लिए खड़े हो जाओ।"

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने बनू क़ुरैज़ा के संबंध में कहा, "मैं इनके बारे में यह निर्णय करता हूँ कि इनके बालिग पुरुषों को क़त्ल कर दिया जाए, और महिलाओं और बच्चों को क़ैद कर लिया जाए। इनका माल बाँट दिया जाए और मकान मुहाजिरों को दे दिए जाएँ, न कि अंसार को।" इस पर पैगंबर मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "साद! तुम्हारा यह फैसला अल्लाह के उस फैसले के अनुसार है जो अल्लाह ने सात आसमानों के ऊपर किया है।"

एक रिवायत में है कि पैगंबर मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "इसी फैसले के बारे में मुझे फरिश्ते ने सहरी के वक्त बताया था।"

ग़ज़वा-ए-बनू क़ुरैज़ा के समापन पर बनू क़ुरैज़ा की सज़ा और अन्य हालात व वाक़ियात का विस्तृत विवरण

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 25 अक्टूबर 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

जंगे अहज़ाब में बनी क़ुरैज़ा द्वारा वादा तोड़ने की वजह से, जंगे अहज़ाब के बाद उनके किलों का घेरा करने का वर्णन किया गया ताकि उन्हें मुसलमानों को नुक़सान पहुँचाने और वादा ख़िलाफ़ी करने की सज़ा दी जा सके।

इसकी और भी तफ़सील यह है कि जब घेरा काफ़ी सख़्त हो गया तो बनी क़ुरैज़ा रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के फ़ैसले पर किलों से नीचे उतर आए।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 9, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, 1993)

बनी क़ुरैज़ा का यह घेरा कितने दिन रहा, इस पर अलग-अलग रिवायतें हैं। कुछ रिवायतें दस दिन की हैं, कुछ पंद्रह दिन की, कुछ चौदह दिन और कुछ जगह पच्चीस दिन भी बताई गई हैं।

(अल्-तबक़ातुल् -कुबरा, भाग 2, पृष्ठ 57, 59, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत 1990)

(सबलुल् हुदा, भाग 5, पृष्ठ 20, दारुल कुतुब इल्मिया, 1993)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने अलग-अलग तारीख़ों की रिवायतों से निष्कर्ष निकालकर बताया है कि इस घेरे की अवधि तक़रीबन बीस दिन थी। (उद्धारित सीरत ख़ातिमुन्नबीयीन, हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब, एम.ए., पृष्ठ 599)

इस फ़ैसले में हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो को हाकिम बनाया गया। इसकी तफ़सील यह है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यहूदियों को क़ैद करने का हुक्म दिया, और उन्हें रस्सियों से बाँध दिया गया। इस काम की निगरानी हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हो ने की। औरतों और बच्चों को किलों से बाहर निकाला और उन्हें अलग जगह रखा गया। इनकी देखरेख के लिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हो को ज़िम्मेदारी दी गई।

उनके किलों में जो कुछ था, जैसे हथियार, सामान, कपड़े आदि, उसे इकट्ठा किया गया। वहाँ से 1500 तलवारें, 300 ज़िरहें, 2000 भाले, 1500 चमड़े की ढालें और बहुत सा सामान मिला। बहुत से बर्तन, शराब, मटके और नशा देने वाली चीज़ें मिलीं, जिन्हें बहा दिया गया। कई ऊँट और दूसरे जानवर भी पाए गए, जिन्हें इकट्ठा कर लिया गया।

औस क़बीले के बुज़ुर्ग रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की खिदमत में आए और कहा, "या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), बनी क़ुरैज़ा हमारे हलीफ़ हैं। वादा ख़िलाफ़ी की वजह से हमारे हलीफ़ भी शर्मिंदा और परेशान हैं। इन्हें हमारी ख़ातिर माफ़ कर दीजिए।" रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) चुप बैठे रहे, लेकिन औस का इसरार बढ़ने लगा। यहाँ तक कि औस के सारे लोग आकर विनती करने लगे।

तब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "क्या तुम इस बात पर राज़ी हो कि उनके बारे में फ़ैसला तुममें से ही एक व्यक्ति के हवाले कर दिया जाए?" सबने कहा, "क्यों नहीं।" आपने फ़रमाया, "यह मामला साद बिन मुआज़ के सुपुर्द किया जाता है।"

एक दूसरी रिवायत में इस तरह वर्णन हुआ है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "फ़ैसले के लिए मेरे सहाबा में से जिसे चाहो, चुन लो।" उन्होंने हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो को चुना और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस पर राज़ी हो गए। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो औस क़बीले के सरदार थे और बनी क़ुरैज़ा के हलीफ़ थे।

इसलिए औस क़बीले के लोग संतुष्ट और ख़ुश हो गए क्योंकि उनका मानना था कि अब मामला हमारे हाथ में है। अरब का दस्तूर था कि हलीफ़ की पासदारी की जाती

थी। लेकिन अल्लाह की क़ुदरत ने कुछ और ही तय किया था। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो का पवित्र और ईमानदार दिल अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को हर रिश्ते और संबंध पर प्राथमिकता देता था।

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो उस समय मदीना की मस्जिद में रुफ़ैदा असलमिया के ख़ेमे में थे। वह ज़ख़्मियों की मरहम-पट्टी करती थीं और उनका मस्जिद में ही एक ख़ेमे में इंतेज़ाम था। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो को उस ख़ेमे में ठहराया था ताकि उनकी देखभाल आसानी से हो सके।

जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मामला हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो के सुपुर्द किया तो औस क़बीले के लोग उनके पास गए। उन्हें एक गधे पर सवार किया गया जिसकी ज़ीन खजूर की छाल से बनी थी और उस पर चमड़े का गद्दा रखा था। लगाम भी खजूर के रेशों की बनी हुई थी। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो भारी-भरकम जवान थे। लोग उनके चारों तरफ़ जमा हो गए और कहने लगे, "अबू अम्र! रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने औस के हलीफ़ों का मामला आपके सुपुर्द किया है ताकि आप उनके साथ भलाई करें। आप उन पर एहसान कीजिए।"

इतने में और भी लोग जमा हो गए, लेकिन हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो चुप रहे। जब लोगों का इसरार बढ़ गया तो उन्होंने फ़रमाया, "अब वक़्त आ गया है कि मैं अल्लाह के बारे में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न करूँ।"

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास पहुँचे, जहाँ लोग पहले से ही मौजूद थे। जब हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो आए और जैसा कि बुखारी और मुस्लिम में वर्णित है, जब वे उस मस्जिद के पास पहुँचे, जहाँ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) मौजूद थे और जिसे बनी क़ुरैज़ा के घेरे के समय नमाज़ पढ़ने के लिए तैयार किया गया था, तो उन्हें देखकर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "अपने सरदार के सम्मान के लिए खड़े हो जाओ।" और एक अन्य रिवायत में है कि आपने फ़रमाया: "अपने इस बेहतरीन आदमी के लिए खड़े हो जाओ।"

बनी अब्दुल अशहल के लोग कहते हैं कि हम हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए दो पंक्तियों में खड़े हो गए। हममें से हर व्यक्ति उनका स्वागत करता रहा, यहाँ तक कि वे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की खिदमत में पहुँच गए। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

"हे साद! इनके बीच फैसला करो।" उन्होंने अर्ज़ किया: "अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फैसला करने के ज़्यादा हक़दार हैं।"

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "बेशक अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है कि तुम इनके बारे में फैसला करो।" औस के लोग कहने लगे: "हे अबू अमर! रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने आपके हलीफ़ों का फैसला आपके सुपुर्द कर दिया है। कृपया इनके साथ अच्छा सुलूक कीजिए और इनकी मुसीबतों को ध्यान में रखिए।"

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया: "क्या तुम बनी क़ुरैज़ा के बारे में मेरे फैसले को मानोगे?" उन्होंने कहा: "जी हाँ, हम आपके फैसले को मानने के लिए पहले से ही तैयार हैं।"

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया : "क्या तुम अल्लाह के अहद व पैमान की क़सम खाकर कहते हो कि मेरा फैसला ही लागू होगा?" लोगों ने कहा: "जी हाँ।" फिर हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस दिशा की ओर इशारा किया जहाँ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) बैठे थे और कहा: "और यहाँ मौजूद ये हज़रात भी वादा करते हैं?" रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और सभी ने कहा: "जी हाँ।"

इसके बाद हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फैसला सुनाया: "बनी क़ुरैज़ा के बालिग मर्दों को कत्ल कर दिया जाए, उनकी औरतों और बच्चों को क़ैद कर लिया जाए, और उनके माल को मुसलमानों में बांट दिया जाए।"

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "साद, तुम्हारा फैसला वही है जो अल्लाह ने सात आसमानों के ऊपर तय किया था।"

एक रिवायत में यह भी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो के फैसले के बारे में फ़रमाया:

"इस फैसले के बारे में मुझे फरिश्ते ने सहरी के वक़्त बताया था।"

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 9-11, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, 1993)

(शरह ज़र्कानी अल्-मवाहिब अल् दुनिया, भाग 3, पृष्ठ 81, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, 1996)

इसकी तफ्सील हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस प्रकार लिखी है:

"आख़िर लगभग बीस दिन के घेराव के बाद, ये बदकिस्मत यहूदी एक ऐसे शख्स को अपना हाकिम मानने पर राज़ी हुए, जो उनके साथी होने के बावजूद उनकी हरकतों की वजह से उनके लिए दिल में कोई रहम नहीं रखता था। हालांकि वह इंसाफ का मूरत था, लेकिन उसमें 'रहमतुल्लिलआलमीन' जैसी दया और मोहब्बत नहीं थी।

इसका विवरण यह है कि क़बीला औस, बनू क़ुरैज़ा का पुराना साथी था। उस समय इस क़बीले के प्रमुख सअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो थे, जो ग़ज़वा-ए-खंदक में घायल होकर मस्जिद के आंगन में इलाज करवा रहे थे। सअद रज़ियल्लाहु अन्हो सवारी पर आए। रास्ते में क़बीला औस के कुछ लोगों ने उनसे बार-बार यह गुज़ारिश की कि, 'क़ुरैज़ा हमारे साथी हैं। जिस तरह ख़जरज ने अपने साथी क़बीला बनू क़ैनुक़ा के साथ नरमी बरती थी, आप भी क़ुरैज़ा से नरमी करें और उन्हें कड़ी सज़ा न दें।' सअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो पहले तो चुपचाप उनकी बातें सुनते रहे, लेकिन जब वे ज़्यादा ज़िद करने लगे तो सअद ने कहा, 'यह वह समय है जब सअद, हक़ और इंसाफ के मामले में किसी की भी आलोचना की परवाह नहीं कर सकता।' यह जवाब सुनकर लोग खामोश हो गए।

जब सअद रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के करीब पहुंचे तो आपने सहाबा से फ़रमाया, 'क़ूमू इला सैय्यिदिकुम' (अपने सरदार के लिए खड़े हो जाओ और उन्हें सवारी से उतरने में मदद करो)। सअद रज़ियल्लाहु अन्हो जब सवारी से उतरकर नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास आए, तो आपने उनसे मुख़ातिब होकर फ़रमाया, 'सअद! बनू क़ुरैज़ा ने तुम्हें हाकिम मान लिया है और उनके बारे में जो तुम फैसला करोगे, वह उन्हें मंज़ूर होगा।' इस पर सअद ने अपने क़बीले औस के लोगों की ओर नज़र उठाकर कहा, 'क्या तुम अल्लाह के सामने यह पक्का अहद करते हो कि तुम मेरे फैसले को हर हाल में मानोगे?' लोगों ने कहा, 'हां, हम वादा करते हैं।' फिर सअद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस तरफ इशारा किया, जहां हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तशरीफ रखते थे, और कहा, 'और वह जो यहां तशरीफ फरमा हैं, क्या वह भी ऐसा वादा करते हैं कि वह मेरे फैसले पर अमल करेंगे?' नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, 'हां, मैं वादा करता हूं।'

इसके बाद सअद रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपना फैसला सुनाया : 'बनू क़ुरैज़ा के युद्ध में शामिल होने वाले मर्दों को क़त्ल कर दिया जाए, उनकी औरतों और बच्चों को कैद कर लिया जाए, और उनकी संपत्ति मुसलमानों में बांट दी जाए।' नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह फैसला सुना तो फ़रमाया, 'लाक़द हाकमता बिहुक्मिल्लाह।' (तुमने अल्लाह के हुक्म के मुताबिक फैसला किया है)।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं, ऐसा लगता है कि बनू क़ुरैज़ा की गद्दारी, फसाद, और खून-खराबे की वजह से ख़ुदाई अदालत ने यह फैसला पहले ही कर दिया था कि उनके युद्ध में शामिल लोगों को खत्म कर दिया जाए। यह फैसला इंसानी दखल के बिना, खुदाई योजना के तहत हुआ। नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इस मामले में कोई फैसला नहीं किया और अल्लाह ने उनके साथी सअद बिन मुआज़ के जरिए यह फैसला करवाया।

और फैसला भी इस प्रकार करवाया गया कि अब हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इसमें कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकते थे, क्योंकि आपने पहले ही यह वादा कर लिया था कि आप हर हाल में उस फैसले को मानेंगे जो सअद बिन मुआज़ करेंगे। विरोधी और आलोचक लोग कभी-कभी हमारे युवाओं को यह कहकर भ्रमित करते हैं कि आपने बनू क़ुरैज़ा पर ज़ुल्म किया। इसका स्पष्ट उत्तर यह है कि आपने तो इस मामले में कोई फैसला किया ही नहीं। यह फैसला अल्लाह तआला ने उनके साथी से करवाया और उस साथी ने भी आपसे पक्का वादा लिया। बहरहाल, 'क्योंकि इस फैसले का असर सिर्फ़ आपकी ज़ात पर नहीं पड़ता था बल्कि सभी मुसलमानों पर पड़ता था, इसलिए आप यह अधिकार नहीं समझते थे कि अपनी राय से, चाहे वह कितनी भी क्षमा और दया की ओर झुकी हो, इस फैसले को बदल दें।

यही ख़ुदाई योजना थी, जिसने आप पर इतना गहरा प्रभाव डाला कि आपके मुंह से यह अनायास शब्द निकल गए : क़द हाकम्ता बिहुक्मिल्लाह। अर्थात, "हे सअद! तुम्हारा यह फैसला ख़ुदाई निर्णय प्रतीत होता है," जिसे बदलने की किसी में ताकत नहीं।'

यह कहकर आप चुपचाप वहां से उठे और शहर की ओर चल दिए। उस समय आपका दिल इस विचार से दुखी था कि एक क़ौम, जिसे ईमान लाने की आपकी दिल से बड़ी तमन्ना थी, अपनी बुरी हरकतों की वजह से ईमान से वंचित रह गई और ख़ुदाई क्रोध और सज़ा का शिकार बन रही है। शायद इसी मौके पर आपने यह अफ़सोस भरे शब्द कहे: "लव आमना बी अशरतुन मिनल यहूद, वला आमनत बी यहूद।" अर्थात, 'अगर यहूद में से दस लोग (अर्थात दस प्रभावशाली लोग) मुझ पर ईमान ले आते, तो मुझे अल्लाह से उम्मीद थी कि यह पूरी क़ौम मुझे मान लेती।'

वहां से उठते समय आपने यह हुक्म दिया कि बनू क़ुरैज़ा के मर्दों, औरतों और बच्चों को अलग-अलग कर दिया जाए। फिर दोनों समूहों को अलग-अलग करके मदीना में लाया गया और शहर में दो अलग-अलग मकानों में रखा गया।

हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आदेश के मुताबिक़ सहाबा (शायद उनमें से कई खुद भूखे रहे हों) ने बनू क़ुरैज़ा के खाने के लिए ढेर सारे फल मुहैया किए। लिखा है कि यहूदी लोग सारी रात इन फलों का आनंद लेते रहे।

सुबह हुई तो मदीना के एक बाज़ार में खाई खोदने का हुक्म दिया गया, जो अबू जहम अदवी के घर से लेकर अहजारुज़्ज़ैत तक खोदी गई। फिर रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) वहां तशरीफ़ फ़रमाए और उनके साथ कुछ सहाबा भी थे। बनू क़ुरैज़ा के मर्दों को बुलाया गया। उन्हें टोलियों में खाई तक लाया गया और वहीं क़त्ल कर दिया गया। जब उन्हें ले जाया जा रहा था, तो उन्होंने काब बिन असद से पूछा, 'तेरी क्या राय है, मुहम्मद रसूलल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) क्या करने जा रहे हैं?' उसने जवाब दिया, 'वही जो तुम्हें बुरा लगेगा।' फिर उसने कहा, 'हलाक़त हो तुम पर! तुम किसी हाल में नहीं समझते। बुलाने वाला छोड़ता नहीं और जो चला जाता है, वह वापस नहीं आता। अब तुम्हारे लिए सिर्फ़ तलवार है।' हय्य बिन अख़तब ने कहा, 'अब इस मलामत को छोड़ दो। अब तुम्हारे लिए कुछ नहीं बचा है। बस तलवार के लिए सब्र करो।' हज़रत अली और हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम को यहूद के क़त्ल की ज़िम्मेदारी सौंपी गई। कुछ रिवायतों के मुताबिक, कुछ क़ैदियों को क़त्ल करने के लिए अलग-अलग सहाबा को बांट दिया गया।" (उद्धारित सबलुल् हुदा वल् रिशाद, पृष्ठ 5, पृ. 12, दारुल-कुतुब अल्-इल्मिया 1993)

"इसकी विवरण हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस प्रकार लिखी है कि 'दूसरे दिन सुबह सअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो के फैसले को लागू करना था। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इस काम की अंजामदेही के लिए कुछ चुस्त लोग नियुक्त किए और स्वयं भी पास ही एक जगह तशरीफ़ ले गए ताकि यदि फैसले को लागू करने के दौरान कोई ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाए जिसमें आपकी हिदायत की आवश्यकता हो, तो आप तुरंत मार्गदर्शन दे सकें। साथ ही, यदि किसी अपराधी के लिए किसी व्यक्ति द्वारा दया की अपील की जाए तो आप तत्काल निर्णय कर सकें। क्योंकि यद्यपि सअद के फैसले के विरुद्ध कोई न्यायिक अपील आपके समक्ष प्रस्तुत नहीं की जा सकती थी, लेकिन एक राजा या लोकतंत्र के मुखिया के रूप में, आप किसी व्यक्ति के बारे में किसी विशेष कारण से दया की अपील अवश्य सुन सकते थे। आपने दया की भावना से यह भी आदेश दिया कि अपराधियों को एक-एक करके अलग-अलग मार दिया जाए, अर्थात एक को मारते समय अन्य अपराधी पास में न हों।'

'इसलिए, एक-एक अपराधी को अलग-अलग लाया गया और सअद बिन मुआज़ के फैसले के अनुसार उन्हें मार दिया गया। जब हय्य बिन अख़तब, जो बनू नज़ीर का नेता था, लाया गया, तो उसने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ओर देखते हुए कहा, "हे मुहम्मद! मुझे इस बात का अफसोस नहीं कि मैंने तुम्हारा विरोध किया। लेकिन यह सच है कि जो अल्लाह को छोड़ देता है, अल्लाह भी उसे छोड़ देता है।" फिर उसने लोगों की ओर देखते हुए कहा, "अल्लाह के आदेश के आगे कोई चारा नहीं है। यह उसी का आदेश और उसी की तक़दीर है।"' इसी प्रकार, जब काब बिन असद, जो बनू क़ुरैज़ा का प्रमुख था, को लाया गया, तो हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उसे इशारे से इस्लाम स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया। उसने कहा, "हे अबुल-कासिम! मैं इस्लाम स्वीकार कर लेता, लेकिन लोग कहेंगे कि मैंने मौत के डर से इस्लाम कबूल किया। इसलिए मुझे यहूदी धर्म पर ही मरने दो।"

एक और घटना रुफाअ नामक यहूदी की है। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है कि 'एक और यहूदी रुफाअ नाम का था, जिसने एक दयालु मुस्लिम महिला की प्रार्थना के माध्यम से उसे अपनी सिफारिश में खड़ा कर लिया। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उस महिला की सिफारिश पर रुफाअ को भी माफ़ कर दिया। उस समय जिसके लिए भी सिफारिश की गई, आपने उसे तुरंत माफ़ कर दिया। यह इस बात का प्रमाण है कि आप सअद रज़ियल्लाहु अन्हो के फैसले के कारण मजबूर थे, अन्यथा आपके दिल की प्रवृत्ति उन्हें मारने की ओर नहीं थी।'

(सिरत ख़ातिमन-नबियीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए., पृष्ठ 602)

यह आरोप का स्पष्ट खंडन है कि आपने अत्याचार किया। इसतरह बनू क़ुरैज़ा के पुरुषों को मारा जाता रहा, जब तक कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनसे निपट नहीं गए। सूरज डूबने तक उन्हें मारा जाता रहा, फिर खाइयों को मिट्टी से भर दिया गया। यह सब कुछ सअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो की आंखों के सामने हुआ। अल्लाह ने उनकी दुआ कबूल की और उनकी आंखों को ठंडक बख्शी। (सिबल अल-हुदा व रशाद, जि. 5, पृष्ठ 13, दारुल-कुतुब अल-इल्मियाह, 1993)

ऐतिहासिक विवरण के अनुसार, महिलाओं में से केवल नुबाता नामक महिला को मारा गया। वह बनू क़ुरैज़ा के एक व्यक्ति हकम की पत्नी थी और उसने एक मुस्लिम सहाबी हज़रत खलिद रज़ियल्लाहु अन्हो को, जो बनू क़ुरैज़ा के किले की दीवार के पास बैठे थे, ऊपर से पत्थर फेंक कर मार डाला था। इस हत्या की सज़ा में उसे मारा गया।

(सबलुल्-हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 13-14, दारुल-कुतुब अल-इल्मियाह, 1993)

लेकिन कुछ जीवनी लेखक इस विवरण से सहमत नहीं हैं और उनका मानना है कि बनू नज़ीर या ख़ैबर की कुछ घटनाएं इस घटना के साथ मिल गई हैं। इसके अलावा, कुछ अन्य प्रमाणों के कारण इस महिला के क़त्ल की घटना सही नहीं है। अल्लाह बेहतर जानता है।

(अस-सहीह मिन सिरत-उन-नबी अल-आज़म (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), भाग 12, पृष्ठ 136-137, अल्-मरकज़ अल-इस्लामी लिद्दिरासत)

रय्हाना बिन्त ज़ैद नज़रिया का भी उल्लेख मिलता है। बनू क़ुरैज़ा की क़ैदी महिलाएं और बच्चे मदीना के मुसलमानों में बांट दिए गए। इनमें बनू नज़ीर की एक महिला रय्हाना बिन्त ज़ैद भी थी, जिसकी शादी बनू क़ुरैज़ा के हकम नामक व्यक्ति से हुई थी। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उसे अपने लिए चुना। कुछ के अनुसार उसने इस्लाम स्वीकार कर लिया था और कुछ के अनुसार उसे एक दासी के रूप में रखा गया था, जबकि अन्य के अनुसार उससे शादी की थी।

(सिबलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 15, दारुल-कुतुब अल् इल्मियाह, 1993) (सिरत एनसाइक्लोपीडिया, भाग 7, पृष्ठ 428-429, दार-उस्सलाम)

विभिन्न विवरण मौजूद हैं। क्या सही है और क्या ग़लत, इसका आगे स्पष्टिकरण मिलता है। इस विवरण की तहकीक की जाए तो पता चलता है कि जीवनी लेखकों को इसमें गलती लगी है। अधिकांशतः यह विवरण वास्तविकता के ख़िलाफ़ और गढ़ा हुआ है। और यदि इसमें कुछ सच्चाई है भी तो इतना ही कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उसे आज़ाद कर दिया था और वह अपने मायके लौट गई थी। वहीं उसकी मृत्यु हुई। और यदि इस विवरण को मान भी लिया जाए तो नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उससे शादी की थी, न कि उसे दासी के रूप में रखा।"

इसलिए, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस विवरण में रय्हाना की गलत घटना के शीर्षक के तहत लिखा है कि, "कुछ इतिहासकार लिखते हैं कि बनू क़ुरैज़ा के क़ैदियों में एक महिला रय्हाना थी, जिसे हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने दासी के रूप में अपने पास रख लिया था। और इसी विवरण के आधार पर सर विलियम म्यूर ने इस अवसर पर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खिलाफ बेहद अपमानजनक आरोप लगाए हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि यह विवरण पूरी तरह से गलत और आधारहीन है। पहली बात, सहीह बुख़ारी की वह उल्लेखित हदीस, जिसमें यह बताया गया है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बनू क़ुरैज़ा के क़ैदियों को अपने साथियों में विभाजित कर दिया था, इस विवरण को गलत साबित करती है। अगर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने किसी क़ैदी महिला को अपने घर के लिए अलग रखा होता, तो स्वाभाविक रूप से इस घटना का बुख़ारी की हदीस में उल्लेख होता। लेकिन बुख़ारी में इसका कोई संकेत तक नहीं है।

इसके अतिरिक्त, अन्य प्रमाणित विवरणों से स्पष्ट रूप से साबित होता है कि रय्हाना उन क़ैदियों में से थी, जिन्हें हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी कृपा से छोड़ दिया था। और इसके बाद रय्हाना मदीना से विदा होकर अपने मायके (बनू नज़ीर) के परिवार में लौट गई थी और वहीं बस गई थी। और अल्लामा

इब्न हजर, जो इस्लाम के उच्चतम शोधकर्ताओं में से एक हैं, ने इसी विवरण को सही ठहराया है।

लेकिन यदि यह भी मान लिया जाए कि रय्हाना को हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी देखरेख में ले लिया था, तो भी निश्चित रूप से वह आपकी पत्नी थी, न कि दासी। इसलिए, जिन इतिहासकारों ने रय्हाना के बारे में यह विवरण लिखा है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उसे अपनी देखरेख में ले लिया था, उनमें से अधिकांश ने यह भी स्पष्ट किया है कि आपने उसे आज़ाद कर दिया था और उसके साथ शादी कर ली थी। चुनांचे, इब्न साद ने एक विवरण खुद रय्हाना की ज़बानी नक़ल की है, जिसमें वह बताती हैं कि, "हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मुझे आज़ाद कर दिया था और फिर मेरे मुसलमान हो जाने पर मेरे साथ शादी कर ली थी। मेरा महर बारह औकिया (चालीस दिरहम) तय किया गया था।"

और इब्न साद ने इस विवरण के मुकाबले उस दूसरी घटना को, जिस पर सर विलियम म्यूर ने अपनी बात बनाई है, स्पष्ट रूप से गलत और तथ्यों के विरुद्ध बताया है। बहरहाल, यह घटना विवादास्पद विवरणों में शामिल है। "और लिखा है कि यही विद्वानों का शोध है। कुल मिला कर, पहली बात तो यह है कि जैसा कि बुख़ारी की हदीस से समझा जा सकता है और 'अस-साबा' में स्पष्ट किया गया है, हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने रय्हाना को अपनी देखरेख में लिया ही नहीं, बल्कि उसे आज़ाद कर दिया था, जिसके बाद वह अपने परिवार में जाकर बस गई थी।

दूसरी बात, यदि यह मान भी लिया जाए कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उसे अपनी देखरेख में ले लिया था, तो भी आपने उसे आज़ाद कर के उसके साथ शादी कर ली थी और उसे दासी के रूप में नहीं रखा।" जैसा कि उनकी अपनी एक हदीस में कुछ लोगों ने उल्लेख किया है। इसकी सच्चाई के बारे में केवल अल्लाह ही बेहतर जानता है।

इसके अलावा, यह भी ध्यान देना चाहिए कि रय्हाना के नाम, वंश, और कबीले आदि के बारे में विवरणों में इतना अंतर है कि उसके अस्तित्व पर ही शक करना शायद अनुचित नहीं होगा। खास तौर पर, जब इस बात को ध्यान में रखा जाए कि उसे एक ऐसे व्यक्ति की पत्नी कहा जाता है जो निस्संदेह इस दुनिया के सबसे अधिक ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। अल्लाह ही बेहतर जानता है।"

(सिरत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए, पृष्ठ 604, 605)

(लुग़त अल्-हदीस, जि. 4, पृष्ठ 527)

माल-ए-ग़नीमत की तक़सीम के बारे में विवरण यह है कि जब माल-ए-ग़नीमत जमा हो गया, तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने खजूरों का हिस्सा बनाकर तक़सीम किया। इस ग़ज़वा (युद्ध) में छत्तीस घोड़े थे। एक घोड़े के लिए दो हिस्से और घुड़सवार के लिए एक हिस्सा तथा पैदल सिपाही के लिए एक हिस्सा तय किया गया।

एक हज़ार औरतें और बच्चे क़ैदी बनाए गए। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने माल-ए-ग़नीमत तक़सीम करने से पहले उसका ख़ुम्स (पांचवां हिस्सा) निकाला।

क़ैदियों के पाँच हिस्से किए और उसमें से ख़ुम्स रख लिया। आप इस हिस्से में से आज़ाद करते, हिबा करते और उसे ख़िदमतगार बनाते। इसी तरह खजूरों में से भी ख़ुम्स निकाला और हर चीज़ का ख़ुम्स निकालकर हिस्सा तक़सीम किया गया। इन हिस्सों के लिए क़ुरआंदाज़ी (लॉटरी) की जाती थी। जो हिस्सा क़ुरआंदाज़ी में ख़ुम्स का निकलता, वह आप ले लेते। हज़रत मम्हियह बिन जज़ा ज़ुबैदी को ख़ुम्स की निगरानी पर निर्धारित किया गया। इसके बाद बाकी चार हिस्से तक़सीम किए गए। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन औरतों को भी हिस्सा दिया, जो जंग के वक्त मौजूद थीं। इन औरतों में हज़रत सफ़िया बिन्त अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत उम्मे अमारा रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत उम्मे सलीत रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत उम्मे अला अंसारिया रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत समीरा बिन्त क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत उम्मे सअद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत कब्शा बिन्त राफ़े रज़ियल्लाहु अन्हा शामिल थीं।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हो को एक समूह के साथ ख़ुम्स के अमवाल (जैसे क़ैदी आदि) को बेचने के लिए शाम भेजा, ताकि उनकी बदले में हथियार और घोड़े ख़रीद लाए जाएं। एक रिवायत के अनुसार, हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने इनमें से एक हिस्सा ख़रीद लिया।

(सबलुल्-हुदा वल्-रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 15, 16, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, 1993)

लेकिन एक राय यह भी है कि इन सभी क़ैदियों को मदीना में ही रखा गया था, कहीं नहीं भेजा गया। फिर उन्हें धीरे-धीरे नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बतौर एहसान रिहा करना शुरू किया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो की तहरीर: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने विभिन्न इतिहास की किताबों से अपनी तहक़ीक़ की है। वह लिखते हैं:

"बच्चे और औरतें, जो हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हो के फ़ैसले के मुताबिक़ क़ैद कर लिए गए थे, उनके बारे में कुछ रिवायतों से पता चलता है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें नज्द की तरफ़ भेज दिया था। वहाँ के कुछ क़बीलों ने उनका फ़िद्या (मुक्ति के बदले धन) अदा करके उन्हें छुड़ा लिया था, और उस धन से मुसलमानों ने अपनी जंगी ज़रूरतों के लिए घोड़े और हथियार ख़रीदे थे।

लेकिन सही रिवायतों से पता चलता है कि यह क़ैदी मदीना में ही रहे थे। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें अपनी परंपरा के अनुसार विभिन्न सहाबियों की निगरानी में तक़सीम कर दिया था। फिर इनमें से कुछ ने अपना फ़िद्या अदा करके रिहाई हासिल की, और कुछ को नबी अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने एहसानन रिहा कर दिया। फिर ये लोग धीरे-धीरे खुद इस्लाम में दाखिल हो गए। इनमें अतीया क़ुरज़ी, अब्दुर्रहमान बिन जुबैर बिन बातिया, क़ैब बिन सुलेम और मुहम्मद बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम इतिहास में सुरक्षित हैं। और यह सभी मुसलमान हो गए थे। इनमें से आखिरी व्यक्ति, मुहम्मद बिन कअब, इस्लाम के एक उच्चस्तरिय मुसलमान थे।

(उद्धारित सिरत सीरत ख़ातमन, हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एमए, पृष्ठ 603, 604)

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का दयालु आदेश:

क़ैदियों और औरतों की तक़सीम या बिक्री के अवसर पर, रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ऐसा आदेश दिया, जो आपकी दया और औरतों के लिए उपकार को दर्शाता है। आपने फ़रमाया:

"जो भी कोई औरत तक़सीम की जाए या बेची जाए, यदि उसके साथ कोई छोटा बच्चा या बच्ची हो, तो उसे उसकी माँ से अलग न किया जाए, जब तक कि वह बालिग़ न हो जाए। और यदि दो छोटी बहनें हों, तो उन्हें भी बालिग़ होने तक अलग न किया जाए।"

(सबलुल्-हुदा वल्-रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 16, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, 1993)

(ग़ज़वा बनू क़ुरैज़ा, बाशमील, पृष्ठ 181, नफीस अकैडमी, कराची)

यह था रहमतुल् आलेमीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अमल, औरतों पर एहसान, क़ैदियों पर एहसान और अपने दुश्मनों पर एहसान। लेकिन आजकल मुसलमानों का क्या हाल है? वे अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के नाम पर लोगों को घरों से बेघर कर रहे हैं, निकाल रहे हैं, क़त्ल कर रहे हैं। इसका नतीजा यह है कि मुसलमानों की अपनी इज़्ज़त खत्म हो रही है। अल्लाह तआला इन मुसलमानों को भी अक्ल और समझ दे।

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल, 15 नवंबर 2024)

★ ★ ★

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहु-ल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

यह शरीअत का अज़ाब है जो ममूरीन की तकज़ीब के नतीजे में क़ौमों पर आता है।

इस अज़ाब की पहचान यह होती है कि इसके बारे में पहले से भविष्यवाणियों में ख़बर दे दी जाती है या दुनिया में असामान्य तौर पर ऐसी मुसीबतें और आफ़तें ज़ाहिर होने लगती हैं जिनकी मिसाल पहले ज़मानों में नहीं मिलती। मसलन, अचानक भूकंप पर भूकंप आने लगते हैं या बीमारियाँ, अकाल, लड़ाइयाँ और दूसरी तरह की मुसीबतें एक ही वक़्त में इस तरह इकट्ठी हो जाती हैं कि लोगों में हाहाकार मच जाता है और हर व्यक्ति मानता है कि यह असामान्य हादसे हैं।

इन शरीअती अज़ाबों के बारे में अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में यह भी बयान फ़रमाया है कि यह अज़ाब वक़्फ़ा-वक़्फ़ा के बाद आते हैं ताकि जो लोग इन बार-बार के झटकों से होश में आ सकें, वे होश में आ जाएँ और पूरी तबाही से महफ़ूज़ रहें।

इसलिए अल्लाह तआला अपने इस क़ानून का वर्णन करते हुए फ़रमाता है :

وَإِذَآ أَذَقْنَا ٱلنَّاسَ رَحْمَةً مِّنۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُم مَّكْرٌ فِىٓ ءَايَاتِنَا ۚ قُلِ ٱللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ۚ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ

(यूनुस: 3)

अर्थात : जब हम लोगों को किसी दुख और मुसीबत के बाद अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं, तो वे झट से हमारे निशानों के बारे में कोई न कोई मुख़ालिफ़ाना तदबीर शुरू कर देते हैं।

तुम उनसे कह दो कि अल्लाह की तदबीर बहुत जल्द कारगर हो जाती है, और तुम जो तदबीरें करते हो, हमारे फ़रिश्ते उन्हें लिखते रहते हैं।

इस आयत में अल्लाह तआला ने बताया है कि हमारा अज़ाब कभी अचानक नहीं आता बल्कि पहले अज़ाब का एक झटका आता है जिसे कुछ समय के बाद हटा दिया जाता है ताकि लोग तौबा करें और अपने ज़ुल्मों और गुनाहों से बाज़ आ जाएँ। लेकिन बदनीयत लोग फिर भी नसीहत हासिल नहीं करते।

वे अज़ाब के वक़्त कुछ हद तक डर जाते हैं, परंतु जब अज़ाब में कमी आती है तो फिर हमारे कलाम और अहकाम के ख़िलाफ़ अपनी तदबीरें शुरू कर देते हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उसकी तदबीर तो बहुत जल्दी नाफ़िज़ हो जाती है, परंतु वह ख़ुद लोगों पर मेहरबानी करते हुए अपनी तदबीर को रोके रखता है।

क्योंकि न तो उसे लोगों के काम भूल सकते हैं कि उसे फ़ौरन बदला लेने की ज़रूरत हो और न सज़ा देने में उसे कोई मुश्किल पेश आ सकती है कि वह यह समझे कि अगर इस वक़्त सज़ा न दी तो बाद में मुश्किल पेश आएगी।

वह हर वक़्त सज़ा दे सकता है और कोई बात उसकी नज़र से छुपी हुई नहीं है। इसलिए मुख़ालिफ़ीन को तकब्बुर और एतराज़ से बचना चाहिए।

जब उनकी पूरी तबाही का फ़ैसला कर दिया गया तो फिर उनकी कोई तदबीर उन्हें बचा नहीं सकेगी।

यह तो शरीअती अज़ाबों का वर्णन था। तबीअी अज़ाब

तबीअी अज़ाब के बारे में अल्लाह तआला ने इस आयत में इशारा किया है :

إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا۟ مَا بِأَنفُسِهِمْ

"इन्नल्लाह ला युग़य्यिरु मा बि-क़ौमिन हत्ता युग़य्यिरु मा बि-अंफ़ुसिहिम" (सूरह रअद, रुकू : 2)।

अर्थात, "अल्लाह तआला कभी किसी क़ौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि वह ख़ुद अपनी आंतरिक हालत को न बदल ले।"

जब वह ख़ुद अपने आमाल से उस मक़ाम को खो बैठती है जो अल्लाह तआला ने उसे अता किया था, तो अल्लाह तआला का रवैया भी उससे बदल जाता है और वह क़ौम तबाही के गढ़े में गिर जाती है।

नतीजा इस आयत में यह बताया गया है कि अल्लाह ने अपनी रहमत से तुम्हें अज़ाब से बचा रखा है और इसे कुछ शर्तों के साथ मशरूत कर दिया है। अब यह तुम्हारा काम है कि अल्लाह तआला के इस क़ानून से फ़ायदा उठाओ। उसके शरीअत के हुक्मों को मानकर उसके शरई अज़ाब से और प्रकृति के क़ानूनों का पालन करके उसके तबीअी अज़ाब से बचो।

(तफ़्सीर-ए-कबीर, भाग 6, पृष्ठ 84, मुद्रित क़ादियान 2010)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

उस पर अमल करो। अगर कहते भी हैं, तो बस यही कि अंग्रेजी पढ़ो, कॉलेज बनाओ, बैरिस्टर बनो। इससे यह मालूम होता है कि ख़ुदा पर ईमान नहीं रहा। एक माहिर डॉक्टर भी अगर दस दिन बाद दवा फायदा न करे, तो अपने इलाज पर फिर से गौर करता है। लेकिन यहां नाकामी पर नाकामी होती जा रही है और उस पर गौर नहीं करते। अगर ख़ुदा नहीं है, तो उसे छोड़कर तरक्की कर लो। लेकिन जब ख़ुदा है और ज़रूर है, तो उसे छोड़कर कभी तरक्की नहीं कर सकते। उसकी बेइज़्ज़ती करके, उसकी किताब की बेअदबी करके यह चाहते हो कि कामयाब हो जाओ और कौम बन जाओ। ऐसा कभी नहीं हो सकता। हमारी राय तो यही है, जिसे आंखें देखती हैं। तरक्की की एक ही राह है कि ख़ुदा को पहचानो और उस पर ज़िंदा ईमान पैदा करो।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 44, संस्करण 2018, क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 8 का शेष भाग

का नाजायज़ तौर पर अपनी तरफ़ आकर्षण किया जाए। इसी लिए लोग आमतौर पर टैटू जिस्म के ऐसे हिस्सों पर बनवाते हैं जिन्हें वे आम लोगों में खोला रखकर उसकी नुमाइश कर सकें। लेकिन अगर कोई टैटू जिस्म के ढाकने वाले हिस्से पर बनवाता है तो पहले तो इसके बनवाते वक्त वह बे पर्दगी जैसी बेहयाई का इर्तेकाब करता है जो खिलाफ़ तालीम-ए-इस्लाम है। नसीहत इसके पीछे भी यही सोच होती है कि ता बुराई और अफ़आल बदी के इर्तेकाब के वक्त अपनी मुख़ालिफ़ जींस के सामने इन पोशीदा अंगों पर बने टैटू की नुमाइश की जा सके। ये समस्त तरीक़े इस्लामी तालीमात के खिलाफ़ होने की वजह से नाजायज़ हैं।

अलावा इसके टैटू के कई ज़ाहिरी और मेडिकल नुक़्सान भी हैं। चूंकि जिस्म के जिन हिस्सों पर टैटू बनवाया जाता है, उस जगह की त्वचा के नीचे पसीना लाने वाले ग्लैंड्स बुरी तरह प्रभावित होते हैं और टैटू बनवाने के बाद जिस्म के इन हिस्सों पर पसीना आना कम हो जाता है, जो तिब्बी लिहाज़ से नुक़सानदेह है। इसी तरह कभी-कभी टैटू चूंकि हमेशा के लिए जिस्म का हिस्सा बन जाता है, इसलिए जिस्म के बढ़ने या सिकुड़ने के साथ टैटू की शक्ल में भी तबदीली आ जाती है, जिससे टैटू ज़ाहिरी तौर पर खूबसूरत लगने की बजाय बदसूरत लगने लगता है और कई लोग फिर उसे वबाल जान समझने लगते हैं, लेकिन इससे पीछा नहीं छुड़ा सकते। इसलिए इन वजहों से भी टैटू बनवाना एक बेमकसद काम है।

तो एक मोमिन मर्द और औरत के लिए अपने जिस्म पर टैटू बनवाना जायज़ नहीं। हां, अगर किसी व्यक्ति ने अहमदी होने से पहले अपने जिस्म पर टैटू बनवाया है और अब अल्लाह तआला ने उसे इस्लाम की सच्ची राह दिखाते हुए अहमदियत क़बूल करने की तौफीक़ दी है, तो उसका ये अफ़अल إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ (यानि सिवाय इसके जो पहले हो चुका) के ज़ुमरे में आएगा। इसके अलावा पहले से बने हुए टैटू से उसके वज़ू और घुसल जनाबत की तकमील में कोई फर्क नहीं पड़ेगा। जिस तरह महिलाओं के नेल पोलिश लगाने से उनके वज़ू पर कोई फर्क नहीं पड़ता और नेल पोलिश लगे होने के बावजूद उनका वज़ू हो जाता है, उसी तरह इस व्यक्ति का भी टैटू के साथ वज़ू और घुसल जनाबत हो जाएगा।"

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

क्या यह कथन "हब्बुल वतन मिनल ईमान" (देशभक्ति ईमान का हिस्सा है) पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कथन है?

क्या मुसलमान इस बात पर विश्वास करते हैं कि कौम-ए-लूत के दो शहरों, सदूम और अमूरा के लोगों को उनके गुनाहों, जैसे व्यभिचार और समलैंगिकता आदि की वजह से नष्ट कर दिया गया था?

शरीर पर टैटू (tattoo) बनवाने के बारे में मार्गदर्शन

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त-35)

प्रश्न: एक मित्र ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में यह लिखा कि हदीस-ए-रसूले अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम "हब्बुल वतन मिनल ईमान" (देशभक्ति ईमान का हिस्सा है) के बारे में कुछ गैर-अहमदी उलमा यह बहस करते हैं कि यह हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कथन नहीं है और इसका हवाला मांगते हैं। मैंने इसका हवाला ढूँढने की कोशिश की, लेकिन मुझे नहीं मिला। हमें इन गैर-अहमदी उलमा को इसका क्या जवाब देना चाहिए?

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपनी पत्रिका 14 अप्रैल 2021 को इस प्रश्न के बारे में निम्नलिखित जवाब दिया:

उत्तर : हज़रत अक़दस मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह हदीस विभिन्न किताबों में वर्णित है। जैसे कि अलामा मुल्लाह अली कारी ने अपनी तसनीफ मौज़ुआतुल क़ुबरा" में, हाफिज़ शम्सुद्दीन अबी अलखैर मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान अस्सखावी ने अपनी किताब "अल-मक़ासिदुल हसनाह फि बयानि क़सीरेन मिनल अहदीसिल मुश्तहरा अला अल्सिनति" में और अलामा मुल्लाह जलालुद्दीन स्यूती ने अपनी तालीफ़ "अल-दुररुल मुन्तसिरातु फिल अहादीसिल मुश्तहिरात" में इसे दर्ज किया है।

रसूले अक़दस सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस कथन के बारे में कुछ सलेफी उलमा ने बेवजह बहस करते हुए और अजीब व ग़रीब दलीलें देकर इसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कथन मानने से इंकार किया है और इसे कुछ सलेफी का बयान क़रार दिया है। जबकि उलमा की यह तमाम बहसें और दलीलें दूसरी अहदीसों की रौशनी में और क़ुरआन करीम की वर्णन की हुई तालीम के सामने रखते हुए खारिज की जा सकती हैं। इसलिए उलमा की इन दलीलों के आधार पर इस हदीस को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कथन होने से इंकार नहीं किया जा सकता।

उलमा की दलील यह है कि वतन की मोहब्बत और ईमान के बीच कोई रिश्ता नहीं है, क्योंकि वतन से मोहब्बत तो काफ़िरों और मुनाफ़िकों ने भी की थी, हालाँकि उनका ईमान से कोई ताल्लुक नहीं था। फिर वतन से मोहब्बत को ईमान का हिस्सा कैसे माना जा सकता है?

सलेफी उलमा की यह दलील इसलिए क़ुबूल नहीं की जा सकती क्योंकि हदीस की मस्दूक किताबों में ऐसी कई हदीसें वर्णित हैं जिनका मज़मून इस उपर्युक्त हदीस के मज़मून की तरह मुसलमानों के साथ-साथ काफ़िरों और मुनाफ़िकों पर भी लागू होता है। जैसे कि सही बुख़ारी में हज़रत अनस बिन मालिक से वर्णित हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: " لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى يُحِبَّ لِأَخِيهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ (सही बुख़ारी किताबुल ईमान) अर्थात : तुम में से कोई व्यक्ति तब तक (क़ामिल) ईमानदार नहीं हो सकता, जब तक कि अपने भाई के लिए वही न चाहे जो वह अपनी खुद की खातिर चाहता है। इसी तरह हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर से वर्णित है कि " أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَرَّ عَلَى رَجُلٍ مِنَ الْأَنْصَارِ وَهُوَ يَعِظُ أَخَاهُ فِي الْحَيَاءِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَعْهُ فَإِنَّ الْحَيَاءَ مِنَ الْإِيمَانِ۔ (बुख़ारी किताबुल ईमान) अर्थात : रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम एक अंसारी सहाबी के पास से गुज़रे जो अपने भाई को हया के बारे में नसीहत दे रहा था, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इसे (हया के बारे में नसीहत देना) छोड़ दो क्योंकि हया ईमान का हिस्सा है। अब सोचने वाली बात यह है कि क्या अपने भाई के लिए वही कुछ पसंद करना जो इंसान अपनी खुद के लिए पसंद करता है, या हया की सिफ़त को अपनाना सिर्फ़ मोमिनों के लिए है और काफ़िर और मुनाफ़िक ऐसा नहीं कर सकते? अर्थात अगर कोई काफ़िर या मुनाफ़िक अपने भाई के लिए वही कुछ पसंद करे जो वह खुद के लिए पसंद करता है या कोई काफ़िर या मुनाफ़िक हया करने वाला हो तो क्या हम इस आधार पर कह सकते हैं कि क्योंकि इन बातों में काफ़िर और मुनाफ़िक भी शामिल हो सकते हैं, इस लिए यह हदीसें (नौज़ुबिल्लाह) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथन नहीं हो सकतीं?

फिर क़ुरआन और हदीस में वादों को पूरा करने पर बड़ी जोर दिया गया है और इसे एक अच्छी सिफ़त माना गया है। अब अगर कोई काफ़िर या मुनाफ़िक़ भी अपने वादों को पूरा कर दे, तो क्या हम यह कहने का हक रखते हैं कि वादों को पूरा करने की तआक़ीद क़ुरआनी हुक्म नहीं है या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कथन नहीं है, क्योंकि काफ़िर और मुनाफ़िक़ भी इस पर अमल कर रहे हैं?

तो, सलेफी उलमा की इन दलीलों के आधार पर हम यह नहीं मानने के लिए तैयार हैं कि "हब्बुल वतन मिनल ईमान" (देशभक्ति ईमान का हिस्सा है) के निहायत ज़हमत-ए-इल्फ़ाज़ पर आधारित हदीस रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बयान नहीं है। यह निश्चित रूप से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मुबारक मुँह से वर्णन किए गए शब्द हैं, जिन्हें उपर्युक्त किताबों ने वर्णन किया है और इन किताबों के पूरे हवाले मैं आपके ज्ञान में वृद्धि के लिए यहाँ दे रहा हूँ।

अल्-मक़ासिदुल हसनाह फि बयानि क़सीरिन मिनल अहदीसिल मुश्तहरा (तालीफ इमाम हाफ़िज़ अल-नाक़िद अल-मोर्रख शम्सुद्दीन अबी अलख़ैर मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान अस्सखावी, जो 902 हिजरी में इंतेकाल कर गए), किताबुल ईमान।

अल-दुर्रुल मुंतशीर फि अल्-हदीसिल मुश्तहिरात (तालीफ आलिमुल्लाह जलालुद्दीन स्यूती, हिस्सा 1, पृष्ठ 9)।

अल-मुआज़ुआतुल क़बीर (तालीफ मुल्ला अली कारी, पृष्ठ 197-193, नाशिर क़ुरआन महल, उर्दू बाज़ार, कराची)।

प्रश्न: एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में लिखा कि क्या मुसलमान यकीन करते हैं कि क़ौम-ए-लूत के दो शहरों, सदूम और आमोरा के लोगों को उनके गुनाहों जैसे ज़िना और समलैंगिकता आदि के लिए जला दिया गया था और क्या यह बात क़ुरआन से साबित है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र 26 अप्रैल 2021 में इस बारे में निम्नलिखित उर्दशात फरमाए:

उत्तर: क़ुरआन में कहीं भी यह नहीं कहा गया कि हज़रत लूत (अलैहिस्सलाम) की क़ौम को जलाया गया था, बल्कि यह बाइबिल का वर्णन है। बाइबिल में लिखा है कि "तब ख़ुदा ने अपनी तरफ से सदूम और आमोरा पर आसमान से जलती हुई गंधक बरसाई। इस तरह उसने उन शहरों को और सारे मैदान को, उन शहरों के बाशिंदों और ज़मीन की सारी वनस्पतियों सहित बर्बाद कर दिया। लेकिन लूत की बीवी ने पीछे मुड़कर देखा और वह नमक के स्तंभ बन गई।"

(पैदा-इश 27-19:24)

इसी तरह लिखा है कि "और यह भी देखेंगे कि सारा देश जैसे गंधक और नमक बनकर पड़ा है और ऐसा जल गया है कि इसमें न कुछ बोया जाता है, न उगता है और न किसी प्रकार की घास उगती है और वह सदूम और आमोरा और अदमा और जबोयम की तरह उजड़ गया, जिन्हें ख़ुदा ने अपनी ग़ज़ब और क़हर में तबाह कर डाला।" (तस्नीन 29:23)

तो, बाइबिल के वर्णन के अनुसार इन लोगों को जलाया गया और गंधक और नमक में तब्दील कर दिया गया था। जबकि इसके मुकाबले, क़ुरआन के वर्णन के अनुसार, अल्लाह तआला ने उनके गुनाहों की सज़ा में, जिनमें नबीयों को विभिन्न तरीकों से तंग करना, उन्हें बुरा-भला कहना, उनका इंकार करना, उन्हें उनके वतन से निकाल देने की धमकी देना, उनके साथियों को तुच्छ नज़र से देखना, राहगीरों को लूटना, पड़ोसियों और मेहमानों के साथ बुरा व्यवहार करना, कमजोर लोगों को तंग करना, बदफिली और समलैंगिकता में लिप्त होना आदि शामिल थे, उन्हें ज़लज़ले के जरिए इस तरह तबाह किया कि उनके बस्तियों को तहस-नहस करके उन पर पत्थरों की बारिश की गई। जैसा कि सूरह-ए-हिज्र में अल्लाह तआला फरमाता है:

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ۔ قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ۔ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ۔ قَالُوا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعَالَمِينَ۔ قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ۔ لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ۔ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ۔ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ سِجِّيلٍ۔ (सूरः हिज्र : 75-68)

अर्थात : और इस शहर के लोग खुशियाँ मनाते हुए इस (अर्थात लूत) के पास आए (इस ख्याल से कि अब इसे पकड़ने का मौका मिल गया है)। इस पर उसने (उनसे) कहा, "यह लोग मेरे मेहमान हैं, तुम (इन्हें डरा कर) मुझे बदनाम न करो। और अल्लाह का तक़वा अख्तियार करो और मुझे ज़लील न करो।" उन्होंने कहा, "हमने तुम्हें हर ऐरे-गैरे को अपने पास ठहराने से मना नहीं किया था।" उसने कहा, "अगर तुमने (मेरे खिलाफ) कुछ करना ही हो तो यह मेरी बेटियाँ (तुममें मौजूद हैं) (जो काफी गारंटी हैं)।" (हे हमारे नबी!) तुम्हारी ज़िन्दगी की क़सम (कि) यह (तुम्हारे विरोधी भी) यकीनन (इन्हीं की तरह) अपनी बदमस्ती में बहक रहे हैं।" इस पर उस (मआ़द) अज़ाब ने उन्हें (अर्थात लूत की क़ौम को) दिन चढ़ते (ही) पकड़ लिया। जिस पर हमने उस बस्ती की ऊपर वाली सतह को उसकी निचली सतह में बदल दिया और उन पर पत्थरों की बारिश बरसाई।

हजरत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस आयत में बयान होने वाले अज़ाब की हिकमत बताते हुए और पत्थरों की बारिश की वज़ाहत करते हुए फरमाते हैं:

"लूत की क़ौम ने क्योंकि उच्च आचार छोड़ कर निम्न आचार अपनाए थे, इसलिए ख़ुदा तआला ने भी उनके शहर के ऊपर के हिस्से को नीचे कर दिया और कहा कि जाओ फिर नीचे ही रहो। कुछ लोग कहते हैं कि पत्थर कैसे गिरे? इसका जवाब यह है कि तेज़ ज़लज़ला (भूकंप) से कभी-कभी ज़मीन का एक टुकड़ा ऊपर उठकर फिर नीचे गिरता है। ऐसा ही उस समय हुआ। ज़मीन जो पत्थरीली थी, ऊपर उठी और फिर धंस गई और इस तरह वे पत्थरों के नीचे आ गए। यह भी मुराद हो सकती है कि उनके घरों की दीवारें उनके ऊपर गिर पड़ीं। मालूम होता है कि वे लोग पत्थरों से मकान बनाते थे। 'सिजील' कहते भी उस पत्थर को हैं जो गारे से मिला हुआ हो। तो यह ऐसी दीवारों पर चिपक जाता है, जिनमें पत्थर गारे से लगाए गए हों।"

(तफ्सीर कबीरी, खंड चौथा, पृष्ठ 99)

एक और जगह पत्थरों की बारिश की वज़ाहत करते हुए हज़रत फरमाते हैं:

"यह बारिश असल में पत्थरों की थी, जो एक खतरनाक ज़लज़ला के नतीजे में हुई। अर्थात ज़मीन का तख़्ता पलट गया और मिट्टी सैंकड़ों फुट ऊपर जाकर फिर नीचे गिरी, और इस तरह जैसे मिट्टी और पत्थरों की बारिश उन पर हुई।"

(तफ्सीर कबीरी, खंड सातवाँ, पृष्ठ 408)

फिर सूरह अश-शुअरा में अल्लाह तआला फरमाता है:

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ۔ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ۔ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ۔ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ۔ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ۔ أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ۔ وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ۔ قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ

يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ۔ قَالَ اِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ۔ رَبِّ نَجِّنِيْ وَاَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ۔ فَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ۔ اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ۔ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ۔ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ

(सूरह अश-शुअरा: 161 से 174)

अर्थात : लूत की क़ौम ने भी रसूलों का इंकार किया, जबकि उनके भाई लूत ने कहा, "क्या तुम तक़वा (धर्म) नहीं अपनाते? मैं तुम्हारी तरफ एक अमानतदार पैग़म्बर बनाकर भेजा गया हूँ। तो अल्लाह का तक़वा अपनाओ और मेरी ताअत करो। और मैं इस (काम) के बदले में तुमसे कोई मेहनताना नहीं मांगता। मेरा मेहनताना सिर्फ़ रब्बुल आलमीन (संसार के पालनहार) के पास है। क्या तुम सभी मखलूक़ात में से नर (पुरुषों) को ही अपने लिए चुनते हो, और तुम उन्हें छोड़ देते हो जिन्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारी बीवियों के रूप में पैदा किया है? बल्कि तुम (मानव स्वभाव के) तक़ाज़ों को हर तरह से तोड़ने वाली क़ौम हो।" उन्होंने कहा, "हे लूत! अगर तुम नहीं रुके तो तुम बहरहाल हमारे देश से बाहर निकाल दिए जाओगे।" (लूत ने) कहा, "मैं तुम्हारे इस काम को नफरत से देखता हूँ। ऐ मेरे रब! मुझे और मेरे परिवार को उनके कामों से निजात दे।" तो हम ने उसे और उसके परिवार को सभी को नजात दी, सिवा एक बुढ़िया के जो पीछे रह गई। फिर (लूत को नजात देने के बाद) हमने बाक़ी सभी को नष्ट कर दिया और हम ने उन पर (पत्थरों की) बारिश बरसाई और जिनको (ख़ुदा की तरफ से) चेतावनी दी जाती है (लेकिन फिर भी वे नहीं मानते), उन पर बरसाई जाने वाली बारिश बहुत बुरी होती है।"

"इसके अलावा, सूरः अल्-अ़राफ, सूरः अल्-तौबा, सूरः हूद, सूरः अन-नमल, सूरः अल् -आंकबूत, सूरः काफ और सूरः अल-कमर में भी इस क़ौम के गुनाहों और उन पर नाजिल होने वाले खुदाई अज़ाब का वर्णन आया है।

तो इन समस्त क़ुरआनी आयात का मुताला करने से साबित होता है कि इस क़ौम को उनके गुनाहों की सजा में ज़लज़ला और मिट्टी व पत्थरों की तूफानी बारिश के ज़रिए हलाक किया गया था। आग से नहीं जलाया गया था।

प्रश्न : एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत एअक़दस में लिखा कि जिस हिस्से पर टैटू बनवाए गए हों, उस हिस्से पर पानी जल्द तक नहीं पहुँच सकता, इसलिये टैटू बनवाने वाले व्यक्ति के वज़ू और घुसल जनाबत की तकमील के बारे में रहनुमाई की दरख़ास्त है। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 16 मई 2021 में इस बारे में हिदायतें दीं:

उत्तर : पहली बात यह है कि टैटू बनवाना और बनाना वैसे भी जायज नहीं है। हदीसों में भी इसकी मनाही आई है कि अल्लाह तआला ने हुस्न के हुसूल के लिए जिस्मों को गोदने वाली और गुदवाने वाली पर लानत की है जो ख़ुदा की तख़लीक में तबदीली पैदा करती हैं। (सही बुखारी किताब-लिबास)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आने के वक्त दुनिया में और खास तौर पर जज़ीरे अरब में किस्म-किस्म के शिर्क का ज़हर हर तरफ़ फैल चुका था और अलग-अलग किस्म की बे राह रवी ने इंसानियत को अपनी पंज़े में जकड़ रखा था और औरतें और मर्द मुश्रिकाना रस्मों और समाजिक बुराईयों में ग्रस्त थे। जिसमें मुश्रिकाना तौर पर बरकत के हुसूल के लिए जिस्म, चेहरा और बाजू इत्यादि पर किसी देवी, बुत या जानवर की शक्लें गढ़वाई जाती थीं। या समाजिक बे राह रवी और फहाशी को फ़रोख्त देने के लिए हुस्न के हुसूल के लिए ऐसा किया जाता था।

जायज़ हदों में रहते हुए इंसान का अपनी खूबसूरती के लिए कोई जायज़ तरीका इख्तियार करना मना नहीं। मगर जिस हुस्न के हुसूल पर हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने लानत का इंजार किया है, उसका यकीनन कुछ और मतलब है। इस लिए इन चीज़ों की मनाही नज़र आती है कि इनके नतीजे में अगर शिर्क जो सबसे बड़ा गुनाह है, उसकी तरफ़ माइल होने का अंदेशा हो या इन अमूर को इस लिए अपनाया जाए कि अपनी मुख़ालिफ़ नाजायज़ तौर पर अपनी तरफ़ मायल किया जाए, तो ये सब अफ़आल नाजायज़ और क़ाबिले मौख़िज़ा करार पाएंगे।

जहां तक टैटू बनवाने का ताल्लुक है तो मर्द हो या औरत, इसके पीछे सिर्फ यही एक मकसद होता है कि उसकी नुमाइश हो और अपनी मुख़ालिफ़ जींस

शेष पृष्ठ 06 पर

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

10 अक्टूबर 2022

अमेरिका में नियुक्त सिरा-लियोन के दूत, तथा गाम्बिया के दूत के सचिव की हज़ूर अनवर से मुलाकात और विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श

स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू यॉर्क की प्रोफेसर, विभाग इतिहास की मुलाकात

अमेरिका के दूर-दराज इलाकों से आए हुए अहमदिया समुदाय के सदस्यों के अपने प्यारे इमाम से मुलाकात के बाद के प्रभाव

एम.टी.ए टेलीपोर्ट का निरीक्षण

सामूहिक बैअत का ईमान अफ़ज़ो समारोह

वाक़फात-ए-नौ और वाक़फीन-ए-नौ की प्यारे हज़ूर के साथ अलग-अलग मुलाकातें, विविध मुद्दों पर हज़ूर अनवर से मार्गदर्शन प्राप्त करना

जमाअत के लोगों के विचार

मिलने वाले ये सहबागी मेरीलैंड (Mary Land) की स्थानीय समुदाय के अलावा विभिन्न 27 समुदायों और क्षेत्रों से आए थे, जिनमें से कुछ ने लंबी और कठिन यात्रा की थी।

Miami से आने वाले 1056 मील, Los Angeles से आने वाले 2670 मील, और Silicon Valley से आने वाले व्यक्तियों ने 2845 मील की यात्रा की थी, ताकि वे अपने प्यारे आका से मिल सकें। मुलाकात के बाद एक दोस्त अथहर अहमद नविद साहब, जो North Virginia से आए थे, ने कहा, "अब मुझे और क्या चाहिए। अल्लाह ने मुझे मुलाकात का सौभाग्य दिया है। मैं अल्लाह से इससे ज्यादा कुछ नहीं मांग सकता।"

एक दोस्त फरहान साहब ने बताया, "जैसे ही हज़ूर आकर बैठ गए, मेरे दिल की सारी टेंशन दूर हो गई, और मुझे तो अपनी सांस की आवाज़ भी नहीं सुनाई दे रही थी।

मेरे दिल की इच्छा अल्लाह ने पूरी कर दी। मेरे लिए तो कुछ बहुत बड़ा हुआ।" नईम अहमद साहब, जो Harris Burg समुदाय से आए थे, ने कहा, "मैं तो हज़ूर को ही देखता रहा और दुआएं करता रहा। मेरी हज़ूर से मिलने की इच्छा अल्लाह ने पूरी कर दी।"

तकी अहमद बाज़ुहा साहब, जो Harris Burg समुदाय से आए थे, ने कहा, "मेरे बेटे की उम्र दो साल है, मुझे उसके साथ मुलाकात का अवसर मिला। दुआ के लिए कहा, लेकिन जब मुझे माइक मिला, तो हज़ूर का जलाल इतना था कि मुझसे बात न हो सकी।"

एक दोस्त मुहम्मद अज़हर ताहिर साहब, जो South Virginia से आए थे, ने कहा, "यह मेरी ज़िंदगी की पहली मुलाकात थी। हज़ूर के चेहरे पर बहुत रोशनी थी, जिसे देख कर इंसान सब कुछ भूल जाता है। मैंने परिवार के लिए दुआ की दरख्वास्त की।"

ज़ियाउल्-र्रहमान साहब, जो Harris Burg समुदाय से आए थे, ने कहा, "मैं थोड़ा ऊँचा सुनता हूँ, आवाज़ ज़्यादा नहीं आई, लेकिन मैं पूरा समय हज़ूर को ही देखता रहा। मैं अपने जज़बात और एहसासात नहीं बयां कर सकता, यह शब्दों से बाहर है।"

एक साहब नासिर समीर साहब, जो North Virginia से आए थे, ने कहा, "हज़ूर के सामने ऐसा था जैसे कोई इर्फान की सभा हो रही हो। हज़ूर अनवर का इतना कहना कि 'ख़ुदा तआला कृपा करे, हमारे लिए यही काफ़ी होता है', इससे दिल को बहुत सुकून मिलता है।"

एक नौजवान अह्-तेशामुल्- हसन साहब, जो South Virginia से आए थे, ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, "हज़ूर से मिलने की बहुत इच्छा थी। हज़ूर दो बार मेरे ख्वाब में आ चुके हैं, मेरे वालिद साहब ने भी ख्वाब में हज़ूर को देखा। आज मैं मुलाकात में हज़ूर का चेहरा ही देखता रहा। मैंने हज़ूर को अपनी अंगूठी दी, हज़ूर ने अपनी अंगूठी से मस कर दी। मैं खुद को बहुत खुशनसीब इंसान समझता हूँ।"

पीर मोईनुद्दीन शाह साहब, जो फिलाडेल्फिया समुदाय से आए थे, ने कहा, "हज़ूर अनवर ने मुझसे पूछा कि तुम किस इलाके के हो। मैंने कहा, 'मैं सूफी अहमद जान साहब के परिवार से हूं' और मुझे नहीं पता था कि मेरे एक रिश्तेदार, जो हाल ही में अमेरिका आए हैं, भी इस सामूहिक मुलाकात में शामिल थे। हज़ूर अनवर ने ही मुझे बताया कि वे भी यहां हैं। यह हज़ूर अनवर की बरकत है कि न केवल मेरी हज़ूर से पहली मुलाकात हुई, बल्कि अपने रिश्तेदार से भी मैं पहली बार मिला।" पुरुषों के साथ यह ग्रुप मुलाकात शाम के 6 बजकर 45 मिनट तक जारी रही।"

लज्नाईमाइल्लाह के ग्रुप की मुलाकात

बाद में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ लजनह हाल में तशरीफ लाए जहां लजनह के ग्रुप ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से सामूहिक तौर पर शरफ-ए-मुलाकात पाया। इस मुलाकात में कुल मिलाकर 245 महिलाएं और लड़कियां शामिल थीं। जो अमेरिका की विभिन्न 28 जमाअतों से आई थीं।

हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "वे महिलाएं जो कोई सवाल करना चाहती हैं या कुछ कहना चाहती हैं, अपने हाथ उठाएं।" इस पर महिलाएं ने अपने हाथ उठाए। अधिकतर महिलाओं ने अपना परिचय कराया और अपनी फैमिली हिस्ट्री का जिक्र किया। कुछ महिलाओं ने अपनी फैमिली के लिए दुआ की दरख्वास्त की। कुछ छात्राओं ने अपनी पढ़ाई के हवाले से हज़ूर अनवर से रहनुमाई की दरख्वास्त की। इन में हेल्थकेयर, कानून, कृषि और मेकिल की छात्राएं शामिल थीं।

कुछ महिलाएं जो मुलाकात में शामिल थीं और जिनकी नई शादी हुई थी, उन्होंने हज़ूर अनवर से दुआ की और नसीहत की दरख्वास्त की। कुछ महिलाओं ने अपनी बेटियों का जिक्र करते हुए उनके रिश्तों के हवाले से दुआ की दरख्वास्त की। कुछ महिलाओं ने अपने ख़्वाबों के बारे में वर्णन किया, जिस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आपको बाकायदा दरूद शरीफ पढ़ना चाहिए। महिलाओं के ग्रुप की यह मुलाकात सात बजकर पच्चीस मिनट पर खत्म हुई।

नौ मुबाईन के ग्रुप की सामूहिक मुलाकात

इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दोबारा मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ लाए, जहां नौ मुबाईन के ग्रुप ने हज़ूर अनवर के साथ मुलाकात की सआदत पाई।

आठ बजकर दस मिनट पर यह मीटिंग अपने इख्तेताम को पहुँची। बाद में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपने दफ्तर तशरीफ लाए।

आठ बजकर 35 मिनट पर हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बेतुल् हमान तशरीफ ला कर नमाज़-ए-मग़रिब व इशा जमा कर के पढ़ाईं। नमाजों की अदा के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहाईशगाह पर तशरीफ ले आए।

दौरा अमेरिका का पंद्रहवां रोज़ 10 अक्टूबर 2022, सोमवार

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह छह बजकर पंद्रह मिनट पर "मस्जिद बिटुल्रहमान" तशरीफ ला कर नमाज़ फज्र अदा कराई। नमाज़ की अदा के बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहाईशगाह पर तशरीफ ले गए।

सुबह हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ्तर की डाक मुआयना की और विभिन्न दफ्तरियों के कामों में व्यस्त रहे।

अमेरिका में नियुक्त सीरा-लियोन के दूत की मुलाकात कार्यक्रम के अनुसार सुबह ग्यारह बजे हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मीटिंग रूम में तशरीफ लाए। जहां सीरा-लियोन के अमेरिका में दूत ऑनरेबल सिदीक अबूबकर वाई साहब हज़ूर अनवर से मुलाकात के लिए आए थे। मोसुफ़ ने हज़ूर अनवर का धन्यवाद करते हुए कहा कि जमाअत अहमदिया सीरा-लियोन में सेहत और तालीम के मैदान में लगातार हमारी मदद कर रही है और जमाअत का सहयोग हमें प्राप्त है। इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यह हमारा फर्ज़ है। दूत ने बताया कि बचपन में उन्हें अहमदिया स्कूल में दाखिला नहीं मिल सका था। वहां मानक देखा जाता था। मैं मानक पर पूरा नहीं उतर सका था।

हज़ूर अनवर ने मुल्क की माली हालत और आर्थिक स्थिति के बारे में पूछा कि मुल्क का सबसे बड़ा ज़रिया-ए-आमदन क्या है। इस पर दूत ने पेश किया कि सीरा-लियोन एक कृषि प्रधान देश है। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "आप कृषि पर ज्यादा ध्यान दें। कोई मॉडल फार्म बनाएं ताकि लोगों को यह पता चल सके कि कृषि को कैसे बेहतर किया जा सकता है। आप लोग पुराने तरीकों पर निर्भर हैं। अब नई तकनीक अपनाएं। आधुनिक मशीनरी का इस्तेमाल करें और आधुनिक तरीके से खेती करें।"

हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "वहां महिलाएं पुराने औज़ारों के जरिए छोटे स्तर पर कसावा और कुछ अन्य फसलें उगाती हैं। अपनी ज़रूरतें पूरी करने के लिए यह ठीक है, लेकिन आप लोगों को बड़े पैमाने पर काम करना चाहिए।"

हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "सीरा-लियोन की ज़मीन बहुत ज़रख़ेज़ है।" हज़ूर अनवर के पूछने पर, दूत ने बताया कि अमेरिका में सीरा-लियोन के लगभग चार लाख पचास हजार लोग रहते हैं। इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "यह तो एक बड़ी संख्या है।"

यह मुलाकात लगभग दस मिनट तक जारी रही। मुलाकात के अंत में, दूत ने हज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने की सआदत भी पाई।

इतिहास की प्रोफेसर शोभना शंकर की मुलाकात

बाद में कार्यक्रम के अनुसार, प्रोफेसर शोभना शंकर ने हज़ूर अनवर से मुलाकात का सौभाग्य पाया। श्रीमती स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू यॉर्क में इतिहास की प्रोफेसर हैं और इनका ताल्लुक भारत से है। इतिहास के क्षेत्र में उनकी विशेषता अफ्रीका में विभिन्न धर्मों, अल्पसंख्यक समुदायों और अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार है।

प्रोफेसर साहिबा ने पेश किया कि "मैं कुछ साल पहले घाना में भी रही हूं। वहां कुछ समय के लिए गई थी।" हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "मैंने घाना में एक समय बिताया है।" इस पर श्रीमती ने पेश किया, "हालाँकि हज़ूर ने काफी समय पहले घाना छोड़ा था, लेकिन हज़ूर का काम आज भी वहां ज़िंदा है। हज़ूर का काम अब भी वहां मौजूद है।"

प्रोफेसर साहिबा ने पेश किया कि वह पश्चिमी अफ्रीका के अहमदियों पर एक किताब लिखना चाहती हैं। इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "अगर आप किताब लिखना चाहती हैं तो आपको वहां जाना होगा और वहां के अहमदियों के इंटरव्यू लेने होंगे। आपको खुद जानकारी प्राप्त करनी होगी। खास तौर पर अगर आप शोध करना चाहती हैं तो हम आपकी मदद के लिए तैयार हैं।" प्रोफेसर साहिबा की दरख्वास्त पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "हम आपको स्थानीय भाषाओं में अनुवाद करने के मामले में भी मदद करेंगे।"

प्रोफेसर साहिबा ने बताया कि वह मुसलमान नहीं हैं, लेकिन उनकी दादी साहिबा ने उन्हें सिखाया था कि हिंदू होने के बावजूद मुसलमानों का सम्मान करना चाहिए।

श्रीमती के एक सवाल पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "मैं चार साल घाना के उत्तर क्षेत्र में रहा हूँ और चार साल दक्षिण क्षेत्र में।" हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "उत्तर और दक्षिण में कबीलाई सिस्टम अलग है और उनके अलग-अलग कल्चर हैं। उत्तर में मुसलमान हैं और दक्षिण में ईसाई हैं, और जो जमाअत की संख्या बढ़ रही है, वह उत्तर में है। हमारे मिशन हाउस, स्कूल और अस्पताल दक्षिण में हैं। सॉल्ट पांड़ में हमारा पहला मिशन हाउस और मस्जिद है और वहां हमारा मुख्यालय रहा है।"

प्रोफेसर साहिबा ने गेहूं उगाने के योजना के बारे में पूछा, जिस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "मैंने सोचा अगर नाइजेरिया में गेहूं उगाई जा सकती है तो यहां घाना में क्यों नहीं उगाई जा सकती, तो मैंने वहां अनुभव किया और यह काफी सफल रहा।"

हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "वहां हर प्रकार की सब्जियां उगाई जा सकती हैं, बशर्ते आपको उपयुक्त सुविधाएं प्राप्त हों।"

हज़ूर अनवर के पूछने पर, प्रोफेसर साहिबा ने बताया कि वह अपनी किताब में लड़कियों के अहमदिया स्कूलों पर ध्यान केंद्रित करना चाहती हैं। "बहुत से अफ्रीकी प्रोफेसरों ने मुझे बताया कि वे अहमदिया स्कूलों में पढ़ते थे। अफ्रीका में लड़कियों के लिए भी बेहतरीन अहमदिया स्कूल थे, जहां लड़कियों ने बेहतरीन तरीके से शिक्षा प्राप्त की।" श्रीमती ने कहा, "वह अफ्रीका के प्रिंटिंग प्रेस और अहमदिया समाचार पत्रों से भी प्रभावित हैं। पहला इस्लामी अंग्रेजी अखबार जमाअत अहमदिया ने ही शुरू किया था।" हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "The Truth" अखबार था। प्रोफेसर ने कहा, "मैं अपनी किताब में यह दिखाना चाहती हूं कि जमाअत अहमदिया ने अफ्रीका की विकास में बहुत बड़ा योगदान दिया है।"

आखिर में हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अफ्रीका में अहमदिया मुस्लिम महिलाओं और उनकी शिक्षा पर अपनी शोध को विस्तार देने के लिए सीरा-लियोन और फ्रेंकोफोन देशों का भी दौरा करें।

यह मुलाकात ग्यारह बजकर 22 मिनट तक जारी रही। अंत में श्रीमती ने तस्वीरखिचवाने का सौभाग्य पाया।

गाम्बिया के दूत के सचिव की मुलाकात

बाद में कार्यक्रम के अनुसार, हज़ूर अनवर अपने दफ्तर तशरीफ ले आए। जहां अमेरिका में गाम्बिया के दूत के सचिव सैको सीसय साहब ने हज़ूर अनवर से शरफ मुलाकात पाया। हज़ूर अनवर ने मोसुफ़ से गाम्बिया की स्थितियों के बारे में पूछा। मोसुफ़ सैको सीसय साहब ने गाम्बिया में जमाअत की शैक्षिक और चिकित्सा सेवाओं तथा अन्य योजनाओं और कार्यक्रमों पर धन्यवाद अदा किया। मोसुफ़ ने बताया कि वह जापान में भी रहे हैं और जापानी भाषा भी बोलते हैं। इस पर हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "नागोया में हमारी मस्जिद है और आपको वहां जाना चाहिए।" हज़ूर अनवर ने फ़रमाया, "जो जमाअत गाम्बिया में सेवाएं कर रही है, वह इंशाल्लाह जारी रहेंगी।"

मुलाकात के अंत में हज़ूर अनवर के साथ मोसुफ़ ने तस्वीरखिचवाने का सौभाग्य पाया।

परिवारों से मुलाकातें

इसके बाद कार्यक्रम के अनुसार परिवारों से मुलाकातें शुरू हुईं। आज सुबह के इस सत्र में 37 परिवारों के 162 सदस्यों ने अपने प्यारे आका से मुलाकात का शरफ हासिल किया। हज़ूर अनवर ने स्नेहपूर्वक शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम भेंट की और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट भेंट की।

आज मुलाकात करने वाले ये सदस्य और परिवार, मेरीलैंड की स्थानीय जमाअत के अलावा अन्य विभिन्न 18 जमाअतों और क्षेत्रों से आए थे। ऑलबनी से आने वाले परिवार 353 मील, शार्लोट से आने वाले 422 मील, बोस्टन से आने वाले 427 मील, जबकि जॉर्जिया से आने वाले 661 मील और ओरलैंडो से आने वाले सदस्य और परिवार 874 मील का लंबा सफर तय रके आए थे।

आज भी मुलाकात करने वालों में कई ऐसे लोग और परिवार थे, जिनकी जिंदगी में यह पहली बार हज़ूर अनवर से मुलाकात का मौका था।

जमाअत सिरीक्यूज़ से आने वाले एक दोस्त ताहिर अहमद साहब ने कहा, "मेरी तो दुनिया ही बदल गई है। इससे अच्छा दिन मेरी जिंदगी में नहीं हो सकता। यह मेरी पहली मुलाकात थी।" वह रो रहे थे। "जब हज़ूर दूर से आते थे तो हम देख लेते थे, लेकिन आज मैं बेहद करीब था। मैं नहीं बता सकता कि मेरी क्या हालत है।" एक दोस्त फातिह बाजवा साहब लॉन्ग आइलैंड जमाअत से आए थे। उन्होंने कहा, "मैं शुरू में बहुत घबराया हुआ था, लेकिन जैसे ही मैं अंदर गया और हज़ूर अनवर पर नज़र पड़ी, तो मैंने अपने दिल में असीम शांति महसूस की। हमें कल ही मुलाकात का पता चला। मैं यहां मस्जिद में ड्यूटी कर रहा था। मेरी पत्नी न्यू यॉर्क में लगभग चार सौ मील दूर थी। वह तुरंत ट्रेन द्वारा यहां आई और हमें मुलाकात का शरफ हासिल हुआ।" जमाअत एटलांटा से आने वाले एक दोस्त फ़जल इलाही साहब ने मुलाकात के बाद बाहर आकर रोना शुरू कर दिया और कुछ कह नहीं पा रहे थे। बड़ी मुश्किल से उन्होंने कहा, "मुझे अपने जज़्बात पर कंट्रोल नहीं हो रहा। मुझे यकीन नहीं आ रहा कि मेरी मुलाकात हो गई है। मैं दस साल का था और दुआ करता था कि मेरी भी ख़लीफा-ए-वक्त से मुलाकात हो। आज 34 साल बाद मेरी मुलाकात हुई है। हज़ूर के चेहरे पर रौशनी ही रौशनी थी। मैं देख नहीं पा रहा था। हज़ूर अनवर ने हमें बहुत दुआएं दी हैं। मेरे बेटे को जन्म में थोड़ा मसला हुआ था। उसका ऑपरेशन हुआ। यह वफ़क़ नो है।

हज़ूर अनवर ने इस बच्चे को बहुत दुआएं दी हैं।

"मुहम्मद वासिफ साहब जमाअत क्लिवलैंड से आए थे। उन्होंने अपने इज़हार करते हुए कहा, "हम पाकिस्तान में थे। हज़ूर अनवर को टीवी पर देखा करते थे और दुआ करते थे कि हमें भी हज़ूर से मिलना नसीब हो। आज अल्लाह तआला ने हमारी दुआएं क़ुबूल करते हुए हमें मुलाकात का इनाम दिया। मुलाकात से हमारे दिल को सुकून मिला है। हज़ूर अनवर ने हमें नसीहत दी कि नमाज़ नहीं छोड़नी चाहिए क्योंकि हम लापरवाही करते थे।"

एक दोस्त अतीक चौधरी साहब बताते हैं, "मैं मुलाकात के लिए बहुत देर से इंतेजार कर रहा था। हम सुबह सात बजे आ चुके थे। जैसे ही हम मुलाकात के लिए अंदर गए तो फिर इस दुनिया में नहीं रहे। इस वक्त मेरे जज़्बात ऐसे हैं कि शब्दों में नहीं बता सकता। हम हज़ूर अनवर के ख़ुत्बात सुनते हैं और टीवी पर हज़ूर अनवर को देखते हैं, लेकिन मुलाकात में जो हालत थी, वह बयान नहीं की जा सकती। हज़ूर अनवर ने हमें कहा कि नमाज़ पढ़ा करें। हज़ूर अनवर ने हमें नमाज़ के अदायगी की तरफ बहुत ध्यान दिलाया।"

जमाअत बाल्टीमोर से आने वाले दोस्त अब्दुल मलिक वली साहब ने अपने इज़हार करते हुए कहा, "हम बहुत कुछ सोचकर गए थे, लेकिन वहां जाकर कुछ नहीं कह सके। जो कहना था, सब कुछ भूल गए। हज़ूर ने फ़रमाया, 'बेटे की दाढ़ी है, लेकिन अब्बू की दाढ़ी छोटी है। अब्बू ने मुझे मुलाकात से पहले ही कहा था कि हज़ूर अनवर यह पूछेंगे कि तुम्हारी दाढ़ी बड़ी है और अब्बू की छोटी है।'"

ज़ुहूर तईब साहब जमाअत विलिंगबोरो से आए थे। उन्होंने कहा, "मैं वर्णन नहीं कर सकता, मैंने तो कमरे में रौशनी ही रौशनी देखी है। हज़ूर ने मुझसे बहुत प्यार से बात की। मुझे बहुत शांति मिली है, हज़ूर ने मुझे नसीहत दी कि अब जाकर जल्दी शादी कर लो।"

जमाअत शार्लोट से एक दोस्त शरीफ अहमद साहब मुलाकात के लिए आए थे। उन्होंने कहा, "ज़िंदगी में पहली बार हज़ूर अनवर से मुलाकात हुई है। आज मेरी ज़िंदगी का सबसे अच्छा दिन है। अब नहीं पता कि यह दिन फिर से नसीब होगा या नहीं।" उनकी पत्नी रोने लगीं, कहने लगीं, "सब बरकत हज़ूर के कदमों में बैठने में है। जमाअत की सेवा में है। मुझे जमाअत की वजह से बहुत बरकतें मिली हैं। मैंने अपने बच्चों को यही समझाया है कि अगर तुम जमाअत के काम करोगे तो तुम्हें बरकतें मिलेंगी। जमाअत के अलावा हमारे पास कुछ नहीं।" उनका बेटा जमाअत अहमदिया कनाडा के सातवें साल में है। उन्होंने कहा, "हज़ूर अनवर ने मुझे नसीहत दी कि पहले अपने परिवार के लोगों को तब्लिग़ करो। हज़ूर ने मुझे बहुत प्यार दिया।"

मुलाकातों का यह कार्यक्रम एक बजकर बीस मिनट पर समाप्त हुआ। इसके बाद एक बजकर चालीस मिनट पर हज़ूर अनवर ईदहुल्लाह तआला ने मस्जिद बैतुल रहमान में आकर नमाज़ ज़हर और अस्र को एक साथ पढ़ाया।

समूहिक बैअत

नमाज़ों की अदायगी के बाद कार्यक्रम के अनुसार बैअत की तक्रीब हुई। हज़ूर अनवर के दस्त मुबारक में बैअत की सआदत पाने वाले दोस्त क्रिस्टोफर आर. मेयर्स का हाथ था। ये शख्स पिछले तीन महीने से तबलीग में थे और नौमुबाईन के कार्यक्रम में शामिल हुए थे और वहाँ उन्होंने हज़ूर अनवर के दस्त मुबारक पर बैअत करने की ख्वाहिश का इज़हार किया था।

क्रिस्टोफर के साथ तीन नौमुबाईन हम्ज़ा इलियास साहब, इमाद अहमद सलीम साहब और स्पैनिश नस्ल के दोस्त रॉबर्टो विलियम सेराटो साहब भी बैअत में शामिल थे।

बैअत की इस तक्रीब में हज़ूर अनवर की इक्तिदा में नमाज़ में शामिल होने वाले सभी अहबाब मर्द और महिलाएं शामिल थे जिनकी तादाद 1300 से ज़्यादा थी।

बहुतों ने इस बात का इज़हार किया कि हमारे वहम और गुमान में भी नहीं था कि हम हस्ती बैअत की तक्रीब में शामिल होने की सआदत हासिल करेंगे। कुछ लोगों ने रुकते हुए कहा कि यह हमारी जिंदगी की पहली बैअत की ऐसी तक्रीब थी जिसमें हम शामिल हुए।

कुछ लोगों ने इस बात का इज़हार किया कि जब हमें मालूम हुआ कि आज नमाज़ ज़हर और अस्र के बाद बैअत की तक्रीब है तो हम अपने घरों से मस्जिद की तरफ दौड़े ताकि समय से पहले पहुँचें और इस सआदत से महरूम न हो जाएं। बैअत की तक्रीब के बाद हज़ूर अनवर अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

मुआइना मस्रूर टेलीपोर्ट मुस्लिम टेलीविज़न अहमदीया

कार्यक्रम के अनुसार छह बजे हज़ूर अनवर अपनी रिहाइशगाह से बाहर आए और "मसरूर टेलीपोर्ट मुस्लिम टीवी अहमदीया इंटरनेशनल" के मुआइने के लिए आए। M.T.A का यह अर्थ स्टेशन मस्जिद बैतुल् रहमान के बाहरी अहाते में स्थित है।

हज़ूर अनवर ने सबसे पहले नेटवर्क ऑपरेशन सेंटर (ट्रांसमिशन रूम) का मुआइना किया और डायरेक्टर टेलीपोर्ट चौधरी मुनीर अहमद साहब से सिस्टम्स के बारे में कुछ बातें पूछीं। इस सेंटर में कंप्यूटर सर्वर, सैटेलाइट, फाइबर ऑप्टिक ऑनलाइन स्ट्रीमिंग ट्रांसमिशन के सिस्टम्स लगे हैं। हज़ूर अनवर ने इस हिस्से का भी मुआइना किया।

इसके बाद हज़ूर अनवर टेलीपोर्ट के मास्टर कंट्रोल रूम (MCR) में गए, जहाँ सारे चैनल्स के कंट्रोल और मॉनिटरिंग सिस्टम्स लगे हैं। हज़ूर अनवर ने डायरेक्टर टेलीपोर्ट से उत्तर और दक्षिण अमेरिका में ट्रांसमिशन के बारे में कुछ बातें पूछीं और हिदायत दीं।

इसके बाद डायनिंग और बोर्ड रूम से होते हुए हज़ूर अनवर इस टेलीपोर्ट के दफ्तर में गए। डायरेक्टर टेलीपोर्ट चौधरी मुनीर अहमद साहब ने हज़ूर अनवर की सेवा में दफ्तर की कुर्सी को बरकत देने की अजनबी दरख्वास्त की। हज़ूर अनवर ने स्नेहपूर्वक कुछ देर के लिए दफ्तर की कुर्सी पर बैठकर डायरेक्टर साहब को हिदायत दी कि आप सामने वाली कुर्सी पर बैठ जाएं ताकि तस्वीर में आ सकें।

इसके बाद हज़ूर अनवर बाहर आए जहाँ मस्रूर टेलीपोर्ट के स्टाफ के सदस्य एक कतार में खड़े थे। हज़ूर अनवर ने दूसरी मंजिल के बारे में पूछा। हज़ूर अनवर को बताया गया कि वहाँ स्टोर को बदलकर पोस्ट प्रोडक्शन का ऑफिस बना दिया है।

इसके बाद हज़ूर अनवर बाहर बरामदे में आए और कुछ देर तक बड़ी सैटेलाइट ट्रांसमिशन डिश का मुआइना किया।

वाकिफ़ात-ए-नौ की क्लास

इस दौरे के बाद छह बजकर पांच मिनट पर हज़ूर अनवर "मस्जिद बैतुल् रहमान " के मर्दाना हाल में आए, जहाँ वाकिफ़ात-ए-नौ की हज़ूर अनवर के साथ कक्षा हुई। (विस्तृत रिपोर्ट यहाँ देखें) वाकिफ़ात-ए-नौ की यह कक्षा सात बजे समाप्त हुई।
कक्षा वाकिफ़ीन-ए-नौ

इसके बाद सात बजकर दस मिनट पर कार्यक्रम के अनुसार वाकिफ़ीन-ए-नौ की हज़ूर अनवर के साथ कक्षा शुरू हुई। (विस्तृत रिपोर्ट यहाँ देखें) वाकिफ़ीन-ए-नौ की यह कक्षा आठ बजकर तीन मिनट पर समाप्त हुई।

इसके बाद हज़ूर अनवर कुछ देर के लिए अपने दफ्तर गए। साढ़े आठ बजे हज़ूर अनवर "मस्जिद बैतुल् रहमान " आए और नमाज़ मग़रिब और इशा को एक साथ पढ़ाया। नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर अनवर अपनी रिहाइशगाह पर चले गए

शेष ..

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 28 November 2024 Issue No. 48

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान की वैकेंसी दर्जा दोम के लिए शर्तें

(1) अभ्यर्थी की आयु 25 वर्ष से अधिक और 18 वर्ष से कम न हो। (2) अभ्यर्थी की शिक्षा कम से कम 10+2 45% फ़ीसद नंबरात के साथ होनी चाहिए। (3)अभ्यर्थी उर्दू/अंग्रेज़ी कम्पोज़िंग जानता हो और तेज़ी 25 शब्द प्रति मिनट हो। (4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगें उन्हीं पर ग़ौर होगा। (5) निसाब परीक्षा कमीशन बराए कारकुनान दर्जा दोम निम्नलिखित है। परीक्षा के प्रत्येक भाग में सफल होना अनिवार्य है।

प्रथम भाग

★ क़ुरआन-ए-करीम नाज़रा मुकम्मल। पहला पारः अनुवाद सहित चालीस जवाहर पारे, अरकान-ए-इस्लाम, पूर्ण नमाज़ अनुवाद सहित।
(30 अंक)

द्वितीय भाग

★ कशती-ए-नूह, बरकातुद-दुआ, दीनी मालूमात जमाअत अहमदिया के अकायद के विषय में मजमून, दुर्रे समीन से नज़्म (शान-ए-इस्लाम) (20 अंक)

तृतीय भाग

★ अंग्रेज़ी भाषा इंटरमीडीयेट के मयार के अनुसार (10+2)
(20 अंक)

चतुर्थ भाग

★ हिसाब मैट्रिक के मयार के अनुसार
(दफ़्तरी इमपरस्ट से संबधित प्रश्न) (20 अंक)

पंचम भाग

★ साधारण ज्ञान (G.K) - (10 अंक)

(6) लिखित परीक्षा में सफल होने वाले अभ्यर्थीयों का ही इंटरव्यू होगा। (7) लिखित परीक्षा, कम्पयूटर टैस्ट और इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल की तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार सेहत मंद और तंदरुस्त होंगे। (8) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपने रहने का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा। बाद में रहने के संबंध में किसी निवेदन पर कोई कारवाई नहीं होगी। (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आना जाना अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।

(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

129वां जलसा सालाना क़ादियान

27, 28, और 29 दिसम्बर 2024 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद क़ादियान)

घोषणा: ड्राइवर पद के लिए आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं - सदर अंजुमन अहमदिया कादियान

शर्तें :

1. उम्मीदवार की आयु 18 वर्ष से अधिक और 40 वर्ष से कम होनी चाहिए।
2. उम्मीदवार के पास कम से कम दसवीं कक्षा पास होना आवश्यक है।
3. उम्मीदवार के पास चार पहिया वाहन चलाने का वैध लाइसेंस होना आवश्यक है।
4. उम्मीदवार के लिए किसी सरकारी या निजी संस्था में ड्राइविंग का कम से कम 2 वर्ष का अनुभव होना आवश्यक है। इसके अलावा, अपनी आवेदन के साथ उस संस्थान का अनुभव प्रमाणपत्र भी प्रस्तुत करना आवश्यक है जहां उम्मीदवार ने अनुभव प्राप्त किया है।
5. उम्मीदवार को अपना जन्म प्रमाणपत्र जमा करना होगा।
6. उम्मीदवार को लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होना आवश्यक है।
7. लिखित परीक्षा और साक्षात्कार में सफल होने वाले उम्मीदवारों का ड्राइविंग टेस्ट भी लिया जाएगा।
8. उम्मीदवार के लिए आवश्यक होगा कि वह नूर अस्पताल कादियान से चिकित्सा फिटनेस प्रमाणपत्र के अनुसार स्वस्थ और तंदुरुस्त हो।
9. चयनित ड्राइवर को नियुक्ति के बाद दूसरे श्रेणी के बराबर भत्ते और अन्य सुविधाएं प्रदान की जाएंगी।
10. चयन होने की स्थिति में उम्मीदवारों को कादियान में प्रारंभिक पांच वर्षों तक अपनी आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।
11. उम्मीदवार के यात्रा खर्च (आवागमन) स्वयं करेगा।

नोट: लिखित परीक्षा, साक्षात्कार और ड्राइविंग टेस्ट की तारीख के बारे में उम्मीदवारों को बाद में सूचित किया जाएगा।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :
नज़रात दीवान सदर अंजुमन अहमदिया कादियान, पिन कोड : 143516
मोबाइल: 09888232530, 09682627592
दफ़्तर: 01872-501130
ई-मेल: diwan@qadian.in

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad